अंक : जुलाई–सितम्बर, 2023

रजि. नं. 31319/77 ISSN : 2320-0995

राजस्थली

भासा, साहित्य, संस्कृति अर लोक चेतना री राजस्थानी तिमाही

सम्पादक
श्याम महर्षि

प्रबन्ध सम्पादक
रवि पुरोहित

लोकचेतना री राजस्थानी तिमाही

राजस्थली

जुलाई-सितंबर, 2023

बरस : 46 अंक : 4 पूर्णांक : 160

संपादक

श्याम महर्षि

प्रबंध संपादक

रवि पुरोहित

प्रकाशक

मरुभूमि शोध संस्थान

(राष्ट्रभाषा हिन्दी प्रचार समिति, श्रीडूंगरगढ़ 331803)

www.rbhpsdungargarh.com

e-mail : rajasthalee@gmail.com

सैयोग राशि

पांच साल : 1000 रिपिया, आजीवण : 2500 रिपिया, संरक्षक सदस्य : 5100 रिपिया

Phone Pay / Google Pay / Paytm : 9414416252

इण अंक में

संपादकीय

आंचळिकता रो मोह छोडण री दरकार — *श्याम महर्षि* — 3

चितार

जुगल परिहार : ओळूं रै गोखै सूं — *श्यामसुंदर भारती* — 4

आलेख

राजस्थानी बात साहित्य में हास्य-व्यंग्य अर नैतिकता — *डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता* — 7

उतावळो सो बावळो — *रविन्द्र बीकावत* — 13

व्यंग्य

सै सूं मोटी गैलसफाई — *प्रह्लाद श्रीमाली* — 16

कहाणी

गोडां घड़ी — *सत्यदीप* — 20

कवितावां

अेक दरखत / कैवो हो पूरो ठूंठ/ सावचेत रैयज्यो / हर दरखत — *पुनीत कुमार रंगा* — 23

आग अर पाणी / दिवलो / सिणगार / धरती घूमै — *सपना वर्मा* — 30

दूहा

मायड़ भासा मान — *किरण राजपुरोहित* — 31

गजलां

छ: गजलां — *पूनम चन्द गोदारा* — 32

जात्रा संस्मरण

म्हारी रामेश्वरम्-मदुरै तीरथ-जात्रा — *छगन लाल व्यास* — 34

कूंत

लघुबंध : भला मनख्यां की भली बातां — *डॉ. मंगत बादल* — 40

सबदां रै धकै भोत कीं है... — *राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर'* — 42

अनुभै रै आंगणै आखरां रो मंडाण मांडता : अैनांण — *डॉ. प्रकाश दान चारण* — 46

संपादकीय

आंचळिकता रो मोह छोडण री दरकार

राजस्थानी भारत री ई नीं, संसार री सिरै सिमरध भासावां मांय सूं अेक है। आं भासा राजस्थान रै लूंठै भौगोलिक क्षेत्र में बोलीजण वाळी बोलियां सूं घणी राती-माती हुई है। राजस्थान रै मारवाड़, मेवाड़, मेवात, ढूंढाड़, वागड़, हाड़ौती अर शेखावाटी अंचळ में बोलीजण वाळी बोलियां सूं आ भासा दूजी भारतीय भासावां दांई घणी सिमरध हुई है। राजस्थानी भासा देववाणी संस्कृत री देवनागरी लिपि में लिखीजै जकी संस्कृत अर हिंदी रै सागै आठ दूजी भारतीय भासावां री भी लिपि है। इण भांत भारत री लगैटगै दस-बारह भासावां री लिपि देवनागरी है। इण वास्तै ओ कैवणो तो तर्कसम्मत कोनी कै राजस्थानी री आपरी कोई लिपि कोनी। वैग्यानिक दीठ सूं सिमरध राजस्थानी भासा कनै लिपि रै सागै-सागै वै सगळा तत्त्व है, जका अेक भासा नै साहित्यिक स्वरूप देवै। इणरो आपरो लूंठो सबद कोस, व्याकरण अर बोलण-लिखण वाळां रो करोड़ां रो कुनबो है।

राजस्थानी रो साहित्य ई घणो सिमरध अर लूंठो है। आज री बगत में इण भासा रै साहित्य में वां सगळी विधावां में लिख्यो जाय रैयो है जको भारतीय समकालीन साहित्य मांय रचीज रैयो है। इण लेखै राजस्थानी लेखकां नै कीं सजग रैवण री जरूरत है। उणां नै साहित्य सिरजण री बगत आपरी आंचळिकता रो मोह छोडणो चाईजै। राजस्थानी रा अबार लग छप्योड़ा व्याकरण मुजब अठै विभक्ति कारक रै रूप में 'रा, रै, री' रो प्रयोग ई करीजै अर औ ईज रूप सर्वमान्य है। इण री ठौड़ आंचळिकता रै मोह में उतरादै राजस्थान वाळा कीं लेखक 'गा गे गी', अगूण वाळा 'का के की' तो दिखणाद वाळा 'ना, ने, नी' रो प्रयोग करै। वै ओ प्रयोग सीमावर्ती भासावां पंजाबी, गुजराती अर हिंदी रै प्रभाव में आय'र करै, जको अपरोगो लागै।

राजस्थानी भासा री सिमरधता सारू जरूरी है कै आपां आपणै पुराणा ग्रंथां रो अध्ययन करां अर उणमें बरतीजी भासा नै बेसी सूं बेसी काम में लेंवता राजस्थानी नै औरूं राती-माती करां। इण बाबत पं. रामकर्ण आसोपा, प्रो. नरोत्तमदास स्वामी, डॉ. कल्याण सिंह शेखावत, बी.एल. माली 'अशांत', जुगल परिहार, डॉ. मदन सैनी अर शंकरसिंह राजपुरोहित सरीखा भासा नै अेक मानक सरूप देवणिया भासाविग्यां रो अनुसरण करण री जरूरत है। जै राजस्थान, जै राजस्थानी।

-श्याम महर्षि

श्यामसुंदर भारती

जुगल परिहार

जुगल परिहार : ओळूं रै गोखै सूं

जुगल परिहार री छिब म्हारा मन में अेक मस्त-मौला मिजाज मिनख रूप है, जको आपरै जैड़ो न्यारो-नरवाळो जीवट राखणियो जीव हो। म्हारो-वांरो साथ 'माणक' पत्रिका री मारफत होयो। वै पैलै अंक सूं माणक सूं जुड़िया हा, म्हैं अेक-दो बरस पछै जुड़ियो। म्हारी दीठ में वै अेक निर्लेप विरती नै पौखणिया हा, जका चायै मिंत होवो कै अणजाण, आगला नै जैड़ी होवती वैड़ी साफ कह देंवता। बिना किणी लाग-लपेट। पण औ तो वांरो अेक पख हो। वांरो असल रूप तो वांरो लेखन हो, जको अणगिण लेखां-आलेखां में बिखरियो पड़ियो है, जको बरसां-बरस शोध-खोज रा विद्यार्थियां नै मारग देखावतो रैवैला। माणक रै सितंबर 2020 रै अंक में म्हैं वां बाबत लिखियो हो कै, ''राजस्थानी भासा माथै वांरी अच्छी पकड़ ही, अर वै लेखनी रा धनी हा। वांरो आखो जीवण संघर्षमय रैयो, पण वै अबखी परिस्थितियां हुंवता थकां ई कदैई हार नीं मानी, ना कदैई आळिया। पौराणिक संदर्भां री वांनै गहरी जाणकारी ही। इण संबंध में बडा-बडा नामधारी वांसूं संपर्क कर राय लिया करता हा। वै आतम-सनमान सूं जीवण वाळा स्वाभिमानी मिनख हा। समझौतापरस्ती वांरी आदत कै फितरत में नीं ही। वै सही अरथ में अेक साचै लेखक रो जीवण जीवणिया मिनख हा।

'माणक' में जदपि वां कनै आपरै हिस्सा रा कालम हा, पण साची पूछो तो पूरै अंक रो दायित्व वै खुद रो ई समझता।

ठिकाणो :
'परमानंदम्'
फतहसागर, जोधपुर
राजस्थान-342001
मो. 9079777197

 ISSN : 2320-0995

जठांतक वांरो बस चालतो, अंक बगतसर त्यार करण नै खपता। कद किसो विशेषांक निकाळणो है, इण बात री सूझना ई वै ईज राखता। असल में वां कनै आपरी निजू लायब्रेरी ही, जकी पोथियां री आलमारियां सूं भरी ही। राम जाणै आपरा कित्ता जरूरी खरच टाळ नै वै इतरी सिमरिध लायब्रेरी सजाई ही, कै चावो जिण टापिक माथै मैटर मिल जावतो। 'माणक' रा घणकरा आवरण लेख वै खुदोखुद त्यार करता, जका लोगां नै घणा दाय आवता। अध्यात्म रा खेतर में तो वांरी सूझना रो जवाब ईज नीं हो... कै जितरा धारमिक लेख आप 'माणक' भणिया हो, उतरा तो भळै किणी धरम री पत्रिका में सायत छपिया होसी।

जुगलजी कौल-वाचा रा ई खराका मिनख हा। 'माणक' में काम करतां वां कनै औरूं केई अखबारां अर पत्रिकावां री ऑफर बरोबर आवती रैवती, पण अेकर वै जद अेकण जागा जुड़िया तो बस जुड़िया ई रैया। अठी-बठी भटका मारण री वांरी आदत नीं ही। असल में इणरो अेक खास कारण तो हो वांरो राजस्थानी भासा सूं प्रेम, जको वांनै 'माणक' सूं जोड़ राखिया हा। वै हथायां में चाय री चुस्कियां बिचाळै कैया करता हा कै, ''जको आणंद आपां री राजस्थानी-मारवाड़ी भासा बोलतां-लिखतां आवै, वो आणंद दूजी भासावां में कठै पड़ियो है। अर पछै चिंचौळी करता पाखती बैठणियां नै छेड़ता कै बतावो—भोगनै में बटीड़ा उठै नै हिंदी में कीकर कैवोला? अरे... आपां दोय कूंटां में फंस नै गाय रैया नीं गोधा... अब थे ईज बतावो कै अठी न्हावां कै बठी न्हावां... कैवो कठी जावां।'' अैड़ी केई बातां चाय री थड़ी माथै जुगलजी कैवता मुळकणियां किया करता, नै बातां में रस घोळता रैवता। पण अबै कठै वै हथायां... वै बातां। अबै तो फकत यादां रैयगी है।

आपरा बगत में जुगलजी अेक बात भळै कीनी, कै वां केई जणा नै राजस्थानी लिखण हेत आगै करिया नै वांरो हौसलो ई बधायो। पत्रिकारिता सूं जुड़ियो अेक वांरो मिंत मुनव्वर लिखै, ''चूंकि म्हैं हिंदीभाषी हो तो अेक दिन बातचीत में जुगलजी कैयो कै थां कोसिस करो तो राजस्थानी में ई लिख सकौ। इण बातचीत पछै म्हैं फिल्म अभिनेता धर्मेन्द्र, ओमपुरी, मिथुन चक्रवर्ती, अनिता राज, इला अरुण इत्याद रा इंटरव्यू लिया अर वां सगळां नै हिंदी सूं राजस्थानी में अनुवाद कर-कर माणक हेत दिया, जका बराबर छपिया। कैवण रो मतळब कै म्हनै अर म्हारा जिसा भळै कैयां नै राजस्थानी में लिखण सारू प्रेरित-प्रोत्साहित करिया। वांनै इण बात रो अणूतो गरब-गुमेज हो कै 'माणक' आपां री मायड़ भासा में बराबर छपण वाळी अेक मात्र बहुरंगी पत्रिका है, जिणनै सगळा अंगेज रैया है।''

जुगल परिहार आज आपां रै बिचाळै नीं है, पण जका काम वै आपरै कम जीवण में राजस्थानी भासा में करग्या है, वै काम कोई पण बंदो सायत ई कर सकै। निवण है वांरी हूंस अर लगन नै, कै वै अेक लांबी लकीर खांच गिया, जठातक पूगणो घणो अबखो है। म्हैं वांनै इण कारण ई घणा याद करूं कै जुगलजी म्हारा अैड़ा मिंत हा, जका आपरी घर-परिवार री बातां ई घणै चाव अर नेठाव सूं किया करता, जाणै कोई आपरा ई परिवार रा किणी सदस्य सूं करता हुवै। अंत में म्हैं तो फकत आ बात कैयनै म्हारी बात पूरी कर सकूं कै—

नैणां झरतौ नेह, निरखता हरखाळू
कठी गया वै लोग हियै रा हेताळू

◆◆

देह : अेक महाभारत

आज संसार मांय हरेक मिनख रै दिमाग में डर समायोड़ो है। इण डर रो विणास अहिंसा सूं ईज संभव है। आततायी हिंसा रो सामनो अहिंसा सूं ईज संभव है। हिंसा अविवेक री परिणति होवै। अहिंसा रो मूळमंतर आस्था, विवेक अर समता होवै। अहिंसा रो मतलब भीरूता नीं, वीरता होवै। महावीर स्वामी, भगवान बुद्ध, महात्मा गांधी अहिंसा रो ईज पथ अपणायो। आं महापुरखां री अहिंसा क्षत्रिय पाळण री अहिंसा है। अहिंसा रो मतलब अकारण हिंसा सूं बचणो है। गिरस्थ जीवण मांय विरोधी हिंसा सूं त्याग नीं होवै। जे खुद माथै, परिवार माथै, गुरु माथै अर धरम रा रुखाळां माथै कोई आततायी हमलो करै तो उण टैम आपां उणरी रक्षा में सगती रो प्रयोग करां तो हथियार उठावां तो बा अहिंसा कोनी। अहिंसा रो मतलब विस्तृतता सूं लेणो है। जीवण रो जथारथ वरतमान में होवै। टाबरां रो अतीत कोनी होवै अर बूढा-बडेरां रो भविष्य कोनी होवै। पण जवानां रो अतीत अर भविष्य दोनूं होवै।

आपणी देह हस्तिनापुर है। मन सिंघासण है। विडरूप अर आंधी वासनावां रै रूप में धृतराष्ट्र उण पर राज करै। दुर्योधन दुराग्रह रूपी है तो दुराचारी दुशासन उण रो टाबर है। जिका धृतराष्ट्र नै आकळ-बाकळ करै। कुंठा रूपी कर्ण तो विद्रोह रूपी भी विकर्ण है। पंचशील रूपी पांचू पांडु पुत्र है। समता रूपी गांधारी है, कुंती करुणा है। विदुर जी विवेक है। प्रशन सरूपी पितामह दास होय'र किंकर्तव्यविमूढ़ है। विज्ञान गति देवै तो धरम दिसा। धरम जीवण रो आधार है तो विग्यान जीवण रो सिखर। इण वास्तै जीवण में धरम अर विग्यान रो संतुलण जरूरी है।

(पोथी : 'जीवण री कळा' सूं साभार। संकलन : हंसराज साध)

डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता

राजस्थानी बात साहित्य में हास्य-व्यंग्य अर नैतिकता

राजस्थानी बात साहित्य घणो सिमरिध नै रूपाळो पण उण मांय हास्य अर व्यंग्य रो जको अेक रूप देखण नै मिलै वो किणी दूजी विधा मांय नीं मिलै।

हास्य व्यंग्य

बात साहित्य बरसां सूं लोक रै मनोरंजन रो लूंठो आधार रैयो है। लोग आज सूं लगैटगै 40-50 बरसां पैली ई रात-रात भर जाग नै बातां सुण्या करता अर केई बातां तो अैड़ी हुंवती जकी केई-केई दिन चालती। अै बातां कोई खास आदमी किणी खास सैळी मांय कैयी जावती अर सुणणियां भी घणौ आंणद सूं सुणता। सुणणियां मांय अेक 'हूंकारियो' भी हुंवतो। जको ठौड़-ठौड़ माथै ओ पक्को हुंकारो दिया करतो। बाकायदा जाजमा ढळती लोग अणूतै कोड अर हरख सूं बातां सुणता आंणद लेंवता, रात-रात भर बातां चालती अर हंसी-मजाक व्यंग्य री धारावां लगोतार बैवती। आं बातां मांय हंसी रो ध्यान राख्यो जावतो। इणी कारण लोग हमेसा सूं आं बातां रा आदी हा, कारण कै अै बातां लोगां रो मन मोयां बिना नीं रैवै। बात तो बात, बात सूं पैली कैयो जावण वाळो 'छोगो' ई सुणणियां नै आंणदित कर देंवतो। देखो, हास्य रो अेक बिड़दाव-जको फगत हास्य ईज पैदा नीं करै ब्लकै अेक आदर्स ग्यान भी साथै देवै—

किसी हुंकारा बिन बात
किसो मिंत विहूणो साथ
किसी चंद विहूणी रात
किसो कडूंबा बिन भात

ठिकाणो :
प्रवक्ता
अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, गंगापुर सिटी
जिला-सवाई माधोपुर
राजस्थान 322201
मो. 9462607259

किसो प्रेम विहूणो मान
किसी जाचक विहूणी जान
किसी बादळ बिन बीज
किसी पोहच बिन खीझ
किसो तरवर बिन पान
किसी पिया बिन प्रीत
किसो मिंत विहूणो साथ
किसी हुंकारा बिन बात।।

अै बिड़दाव अपणै आप मांय हास्य, व्यंग्य, मनोरंजन अर ग्यान री पूरी खिमता राखै। देखो, अेक व्यंग्यात्मक बिड़दाव—

डूंगर री चढाई भूंडी
ओछै री लड़ाई भूंडी
घर में तो खड़ाई भूंडी
ऊंचलो तो खेत भूंडो
साधू वाळो हेत भूंडो
कुत्ती आळो वेंत भूंडो
खीचड़ा में लोदो भूंडो
गायां मांय तोदो भूंडो
घरै हिलियो सौदो भूंडो
कान मांयली कोडी भूंडी
दाड़ी बिना ठोडी भूंडी
घर में त्रिया मोडी भूंडी।

व्यंग्य रो इणरो मोटो उदाहरण और कांई होय सकै! व्यंग्य मांय इण तरै री सबळी बात कैवणो फगत राजस्थानी बात साहित्य मांय ईज संभव है और कठैई नीं। जे राजस्थानी बात साहित्य रै हास्य अर व्यंग्य रो सबळो नमूनो देखणो है तो वो देखो इण 'छोगै' में—

बात री बात
कुळापात री कुळापात
खेजड़ी रो कांटो साढी सोळै हाथ
जिणरा घड़िया तीन पाट
दो सुळियोड़ा नै अेक चढै ई नीं
ज्यां में थपिया तीन गांव
दो ऊजड़ नै अेक बसै ई नीं

ज्यां में बसिया तीन कुम्हार
दो ढोटी नै अेक घड़ जाणै ई नीं
जका घड़ी तीन हांडियां
दो जोजरी नै अेक बाजै ई नीं
ज्यां में रांधिया तीन चावळ
दो कटकटा नै अेक सीझै ई नीं
ज्यां में निंवतिया तीन बामण
दो इग्यारसिया नै अेक जीमै ई नीं
ज्यांनै दीवी तीन गायां
दो बांझड़ी नै अेक ब्यावै ई नीं
जका लाई तीन बिछिया
दो तो पैल नै अेक हालै ई नीं
ज्यांरा बटिया तीन रिपिया
दो खोटा नै अेक चालै ई नीं
ज्यांनै परखिया तीन सोनार
रात रा रातिंदौ, दिन रा सूणै ई नीं
ज्यारै मारी तीन थाप
दो टळगी नै अेक लागी ई नीं
सोनार बेरा बावड़ी करण नाटा
दो सूखा, अेक में पाणी ई नीं।

राजस्थानी बातां रो जादा महत्त्व तो हास्य अर व्यंग्य री प्रधानता री वजै सूं ईज है। क्यूंकै कोई भी मिनख आज रा जुग मांय दैनिक जीयाजूण री आपाधापी सूं कठै न कठैई अैड़ी बात सुणणी पसंद करै जिण मांय उणरो मनोरंजन होवै या उणनै हंसो आवै। इण सूं वो अपणै आपनै तरोताजा महसूस करै अर बात कानी आकरसित हुवै। इणी बात कानी इसारो करता अर बात मांय हास्य री स्थिति बतावता चावा विद्वान मोहनलाल जिज्ञासु लिखै, ''हास्य आपां रै जीवण रै खातर बौत ई उपयोगी उपकरण है, इण वास्तै कहाणियां मांय इणरो महत्त्व ओजूं बध जावै है। हास्य बो ईज है जको सरस है। मधुर है, गंभीर है अर हंसता-हंसता मारमिक तथ्यां री ओर संकेत करै है।''

हास्य अर व्यंग्य रै साथै-साथै बात मांय गंभीरता भी जरूरी है अर इणी रै आधार माथै व्यंग्य री रचना होवणी चाईजै। औ अेक मनोविज्ञानिक साच है कै अेक ईज तरै रो पदारथ लगातार खावण सूं उण पदारथ यानी उण चीज रै पेटै आपां री थोड़ी रुचि कम व्है

जावै अर मीठा रै साथै खट्टो अर चरपरो खावण रो मन करै अर पछै पाछो मीठो। अैड़ी ई दसा मांय गांव रो करसो जद आखो दिन काम करयां पछै थाक्योड़ो घरै आवै तो भोजन रै पछै उणमें मनोरंजन री जरूरत होवै। इणी भांत दूजा लोग भी। इणी बात नै आपरा सबदां मांय कैवता चावां विद्वान चंद्रकेतु शर्मा लिखै, ''मिनखी जीवण नै कटुता सूं उळझ-उळझ'र फिरतां-फिरतां जीवण खातर हास्य री जरूरत हुवै है। उणरै जीवण रै वास्तै औ जरूरी है कै बो जीवण री विभीषिकावां नै हंसी रा फव्वारां मांय बहा'र खुद नै स्वच्छ राख सकै। उणी सुख शांति रै खातर औ भी जरूरी है कै बो मिनख विसेस में आ जावण वाळी कमजोरियां माथै व्यंग्य कस'र उणां नै पूरो करै।''

साहित्य समाज रो दरपण होवण री वजै सूं मिनख इण आपा-धापी रा जुग मांय आपरो मनोरंजन करण सारू कै अैड़ो करणी चावै, सुणणी चावै, जिणसूं उणनै हंसी तो आवै ईज आवै पण जीवण रो अेक साच भी उण मांय छिप्योड़ो होवै। असल मांय व्यंग्य रो अरथ राजस्थानी मांय 'डोड' में बात कैवणो भी होवै, क्यूंकै डोढ में कियां बिना आगलो मानै कोनी, इणी सारू अठै 'डोड' रो मतलब भी व्यंग्य सूं है। इण तरै रा केई अैनाण आपां रै इण बात साहित्य मांय ठौड़-ठौड़ देखण नै मिलै। इणी बात कानी इसारो करतां राजस्थानी रा चावां विद्वान सौभाग्यसिंह शेखावत लिखै, ''राजस्थानी बातां मांय हास्य रा तत्त्व समायोड़ा रैवै। लोककथावां जठै शिक्षा, सदाचार आद प्रदान करै, वठैई हास्य अर व्यंग्य मनोरंजन भी पर्याप्त रूप सूं प्रदान करै। सदियां सूं मौखिक परंपरा सूं अै कहाणियां राजस्थानी जन समाज में आशा, आल्हाद, हरख-विषाद, उत्साह-उमंग, शिक्षा-सदाचार अर आमोद-मनोरंजन रै भावां नै वितरित करती रैयी है।''

सौभाग्यसिंह शेखावत जी री बात अेक दम साची है। वाकैई राजस्थानी बात साहित्य मांय हास्य अर व्यंग्य रो लूंठो पुट रैयो है। इण रा केई उदाहरण बातां मांय ठौड़-ठौड़ देखण नै मिलै जका इण भांत है—''गोडै हेठै दबियोड़ो बकरियो कसाई रै हाथ री छुरी सूं बचै तो मारवाड़ रो करसो बाणियै रै कान में खुसियोड़ी कलम सूं बचै। बेरै में सेजै रो पाणी, बाणियै रो लेणौ, पगां हेटै मगरेटी गमीं, माथै बिनां पत रा बादळा अर घर में बरस ब्यावणी घरवाळी—आं पांच दोखियां री बखड़ी में खुद भगवान ई झिल जावै तो मूंड में त्रण ले सौ बार हार मानणी पड़ै, पछै मारवाड़ रै जलम अभ्यागत बापड़ै करसै रो कांई गाढ?''

इण तरै रा केई दाखला राजस्थानी बात साहित्य मांय देखण नै मिलै जका व्यंग्य अर हास्य रा बौत ई जबरदस्त उदाहरण है। राजस्थानी बातां री भासा हालांकै सामान्य राजस्थानी रैयी है, पण बात-बात मांय व्यंग्य करणो अर हास्य पैदा करणो ईज आं राजस्थानी बातां री खासियत है। इण सारू राजस्थानी बातां मांय दूजी सगळी विसेसतावां

सूं हास्य अर व्यंग्य री विसेसतावां सगळां सूं सिरै है। अठै हास्य अर व्यंग्य सारू केई बार उलटी बात कैयनै भी काम लियो जावै, ज्यूं भूंडा नै फूटरो, कायर नै वीर, कंजूस नै दानी आद कैयनै भी हास्य अर व्यंग्य पैदा करयो जावै तो पछै अगर पूरी बात कैवणी होवै तो हास्य अर व्यंग्य ही कांई स्थिति होवैला आप खुद समझ सको।

नैतिकता

राजस्थानी बात साहित्य मांय अैड़ी चीजां मिलै जठै नैतिकता नै निभावण री अबखाई आई, क्यूंकै परिस्थितियां अैड़ी ई ही। राजा उदयादित सागै ई अैड़ो ईज हुयो। वै आपरी राणी बाघेली री बात मानण नै मजबूर हा क्यूंकै वांरी रांणी ही अर जगदेव जको वांरो बेटो हो उणरी मां नै वै दुहाग देय चुका हा। पण जगदेव माथै वांरो मन घणो हो। पण बाघेली वांनै जगदेव री सहायता करण सूं बार-बार रोकती पण राजा उदयादित आपरी नैतिकता री वजै सूं दोनूं बेटा नै बराबर राखता। इणी तरै री नैतिकता रा दरसण 'जगदेव पंवार री बात' मांय देखण नै मिलै। देखो, राजा जगदेव नै कांई कैवै, ''तरै राजा कह्यो, 'बाघेली कहै पिण म्हारे तो रिणधवल नै थैं सारिखा कंवर छो। नै वळै तोनै कुं सरसो गिणती मांहे गिणूं छूं। मैं म्हारो माल दीधो छै नै थारी असवारी रै वास्तै म्हारी असवारी रो खासो घोड़ो दीधो।' तरै कंवर मुजरो कीधो ने राजा सख दीधी नै कह्यो, 'सांझ रै दरबार बेगा आवज्यो।' इसौ कहि सीख दीधी। घोड़ो खालसा री पायगा री जायगा राख्यो।''

राजस्थानी बात साहित्य मांय नैतिकता रा अैड़ां रूप घणाई देखण में आवै पण नैतिकता री मिसाल न्यारी-न्यारी है। राजस्थानी बात साहित्य मांय इण तरै री केई बानगियां रा दरसण होवै। तद ई तो बींझा सारू सोरठ रो मसाणां मांय जाय औ कैवतां ई अगनी प्रकट होय ज्यावै कै अगर म्हैं सुद्ध मन सूं इण जीवण में जे बींझा सूं प्रेम करयो होवूं तो ईसर मारै साटे अगनी प्रकट करै। अर अगनी तुरंत प्रकट होय जावै। इणसूं मोटो, धरम, दरसण, प्रेम, सत्य, नैतिकता और कांई होय सकै! हांलाकै सोरठ सारू कोई कमी कोनी ही पण बींझा सारू उणरो प्रेम साचो हो, उणरी मन री भावना सही ही। इणी सारू बा बींझा सारू आपरा प्राण देय दिया अर बींझा री आत्मा मांय समायगी। नैतिकता री इण सूं मोटी मिसाल और कांई होय सकै देखो—''सोरठ सरब आभरण उतार नै ऊदियै ढौ रै मसांण ऊपरि बैस सूरज साम्हां हाथ जोड़ नै कहै—लोक तो घणी ही बात कहै छै। जो मन सुद्ध नेह बींझै सूं इण जनम म्हारो छै तो भवोभव बींझै री अरध सरीरी स्त्री होवूं। अै सरीर नूं अगन, लाकड़ी, पाखांण नजीक हुवै तठा सूं अगनी प्रगट सरीर दहिज्यो। इतरी बात कहतां तत्काल अगनी प्रगटी। सोरठ रो सरीर बींझै रै मसांण मांहै एकठो हुवो। बींझा रो जीव सोरठ जीव पुंहतो। सनेह पाळणो कठण छै।''

राजस्थानी बात साहित्य तो नैतिकता री ई मिसाल है। अठै बात-बात मांय नैतिकता रा दरसण होवै। अठारी घणकरी बातां नैतिकता सूं लण-लोळ हुयोड़ी। इणी तरै री अेक बात है 'राजा भोज अर खापरा चोर री'। खापरो चोर राजा रै साथै चोरी करियां पछै भी आपरी नैतिकता नीं छोडै अर चोरी करयोड़ा गैहणा रा डब्बा पाछा लाय राजा नै सूंप देवै अर साथै ई राजा नै सीख भी देवै कै थे राजा हो, थांनै ठगा माथै विस्वास नीं करणो चाईजै। देखो खापरा चोर री नैतिकता री लूंठी मिसाल—''दूजै दिन डबा ले जाय राजा री नजर किया। राजा कह्यो—डब्बा कठाऊं हाथ आया? खापरे कही-महाराज! रात चोरी रा सागड़द था तिके भेळा किया सूं पग हाथ आयो। पछै अमकड़ी डूंगरी में जाय लाभा सूं ले आयो सूं महाराज। वड़वखती, इव ठगां सूं भेळी जो, कठै धको खाय ऊभा रह्यो। राजा पण बातां सुण दबकीज गयो, मुंहड़ो उतर गयो। तद खाफरै सलाम किवी।''

राजस्थान आज आखी दुनिया सूं न्यारो-निरवाळो है तो उणरै लारै अेक खास कारण है अठै रा लोगां री नैतिकता। अठै रा लोग नैतिक तौर माथै आखी दुनिया सूं सिरै। अठै रा वीर इणी वजै सूं पूजीजै। वीर तेजाजी बळता सांप नै बचावै भी अर उणरै नाराज होयां आपरी नैतिकता निभावै अर जबान माथै डसायनै भी आपरो फरज पूरो करै। इण तरै री मिसाल दुनिया मांय कठैई देखण नै नीं मिलै। इण सारू कैयो जाय सकै कै राजस्थानी बात साहित्य नैतिकता रै तौर माथै घणो सबळो अर रातो-मातो। आं बातां मांय नैतिकता री केई लूंठी बातां आपरा पड़दा खोलै तो लखावै कै राजस्थान रा लोगां सूं लूंठी नैतिकता औरूं कठैई नीं होय सकै। अै नैतिक बातां आवण वाळी युवा पीढी नै नूंवो मारग देय सकै वांरौ भविस्य संवार सकै।

◆◆

पुरस्कार री बधाई

राजस्थली री प्रकाशक संस्था कानी सूं प्रकाशित कथा-संग्रै **'काया री कळझळ'** नै राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर सूं **'राजस्थानी महिला लेखन पुरस्कार'** (2021-22) सारू कथाकार संतोष चौधरी नै मोकळी-मोकळी बधाई अर मंगळकामनावां।

 ISSN : 2320-0995

रविन्द्र बीकावत

उतावळो सो बावळो

'उतावळो सो बावळो' आपनै या व्हैणावत तो केई बार सुणी होगी। सबसूं पैली तो म्हूं ईं व्हैणावत को अरथ आपकै तांई बताऊं। कदै-कदैई आपण कोई बात पे या फेर कोई काम कै लेखै अतना उतावळा हो जावां छां कै बना सोच्यां-समझ्यां, धाकाधीक में असी गलती कर द्यां छां जे न करणी चाईजै। केई बार आपका जीवन में या फेर आपका परिवार, रिश्तेदार, मित्र, आपका मलबा-जुलबा हाळा का जीवन में असी कांई न कांई घटना जरूर घटी होवैगी जीं में उतावळापण को दरसाव होयो होवै।

जद आपण उतावळापण में असी गलती करां छां तो आपण नै नुकसाण भी उठाणो पड़ सकै छै। आपणी छोटीसीक गलती की वजह सूं आपण मसा जावां छां। फेर पछतायां कांईं होवै...? आपण पैली ई धीरपाई रखाण'र साता सूं काम करां तो गलत परिणाम क्यूं भोगणी पड़ै। य्हां म्हूं म्हारै लारां घटी कुछ सांची घटनावां आपकै तांईं बताऊं छूं।

अेक बार कोई मित्र की लेरां ऊंकी साळी की सगाई में म्हारो भी जाबो होयो। तीन-च्यार घंटा को सफर करकै जद म्हां वां पूग्या तो तरोताजा होबा कै लेखै पास की नंदी में न्हाबा चलग्या। नंदी में पाणी तो न्ह बहरयो छो पण बडी-बडी अर नाळी-नाळी चट्टानां कै बीचा में जे बडी-बडी खान्या की नांई ठाम छी वां में अथाह नखरयो पाणी भरयो छो। असी प्राकृतिक रूपाळी ठाम देखकै सभी बड़ा खुश छा। सब लत्ता खोलकै न्हाबा का

ठिकाणो :
112-बी, मदर टेरेसा स्कूल रै कनै
वीर सावरकर नगर,
कोटा-324005
मो. 9636721418

आणंद में मशगूल होग्या। जीं नैं तरणी न्ह आवै छो ऊ असी ठाम हेरकै न्हाख्यो छो ज्यां ऊंकै ताई कोई समस्या न होवै। जीं तरणी आवै छो ऊ असी ठाम पे न्हाबा को मजो लेख्यो छो ज्यां भरपूर पाणी छो।

म्हां सबकै लारां सगाई में ग्या लगभग दस-बारह बरस का दो टाबर भी नंदी में न्हाख्या छा। वां टाबरां कै तांई तरणी न्ह आवै छो। म्हां जे किराया की जीप ले'र ग्या छा ऊंको ड्राईवर वां टाबरां कै ताई तरबो सखाबा लागग्यो।

थोड़ी देर पाछै ऊ ड्राईवर तो न्हा-धो'र बारै खडग्यो पण वै दोनूं टाबर हूंस में आर खुद ही तरबा की आफळ करबा लागग्या। फेर काईं होणो छो, वै दोनूं नंदी में डाबक-डूबा होबा लागग्या। या देखकै जे ओर मनख नंदी में ओडा-डोडा न्हाख्या छा वै वांई बचाबा कै काण दौड़ पड़्या।

अजी दौड़ कांई पड़्या... धम्म धम्म नंदी में अेक-अेक करकै वां टाबरां कै तांई बारै खाडबा कै लेखै कूदग्या। पण वै संदा जे टाबरा कै तांई बचाबा कै लेखै नंदी में कूदया छा। थोड़ी देर में ही नंदी का पाणी में डूबता नजर आया। वांकै तांई तरण्यां तो आवै छो पण वां टाबरां नै खुद कै तांई बचाबा कै लेखै वां बचाबा हाळा कै तांई गाडा पकड़ल्या। जींसूं वांको कांई भी बस न चाल्यो।

म्हनै न्हा'र चड्डी-बनियान पहर ल्या छा अर म्हूं ऊं ठाम सूं थोड़ोक दूरे खड़ो छो। अतनी देर सूं म्हूं या घटना देखकै भी ईं बात कै तांई साधारण-सी बात ही समझख्यो छो। म्हनै सोची अबार बारे खाड लेगा वांकै तांई। पण जद म्हनै हालात बगड़ता देख्या तो चेतणी ही पड़्यो।

अब तो नंदी में म्हारो मित्र ही डाबक-डूबा होतो दीखख्यो छो अर ओरां का तो हाथ, माथा भी न दीखख्या छा। शायद वांने अेक-दूसरा कै तांई पकड़ मैल्यो छो अर वै नंदी की ऊंडाई में जा पूग्या छा। ऊं ठाम पे नंदी की ऊंडाई जादा ही छी। म्हनै म्हारा मित्र को हाथ को पंजो अर माथो पाणी में बारै-भीतर होतो दीखख्यो छो। अब तो म्हनै वांई बचाबा कै लेखै कान-कांई करणो ही छो। म्हूं बेगो सोक वांकी मदद करबा काण नंदी की ऊं ठाम पे पूग्यो। पण म्हनै धाकाधीक न्ह करी। म्हूं नंदी में कूदयो कोइनै। म्हनै तो ऊपर सूं ही मित्र का हाथ को पंजो म्हारा अेक हाथ सूं पकड़कै, मित्र कै तांई बारै खांच्यो। फेर कांई छो, जस्यां ही मित्र बारे खड़्यो लमटेर की नांई ऊंकै पाछै अेक-अेक करकै सारा ही बारे खड्याया। म्हारी अेक छोटी-सी समझदारी सूं बोत बडी अणहोणी होबा सूं टळगी।

अस्यांई अेक बार म्हारा मित्र नै नूंई कार खरीदी। कंपनी का शोरूम सूं कोई कार चलार घरां पूगाग्यो। म्हारा मित्र तांई कार चलाणी न आवै छी। ऊंनै ऊंका अेक मित्र कै तांई कार चलाबो सखाबा कै लेखै बुलायो। ऊंका मित्र नै दो-तीन घंटा पाछै आबा की बात

क्ही। पण म्हारा मित्र कै कार चलाबा की असी हूंस चढ़री छी कै ऊंनै दो-तीन घंटा को टैम भी दो-तीन बरस की नांई दीखरयो छो। ऊंसूं सबर न होई।

म्हारा मित्र नै अेक-दो बार कोई की कार छणीक-सी चलाई होवैगी, ईंसू ऊंई क्लच, ब्रेक, रेस अर गैर को ज्ञान छो। ईं लेखै म्हारा मित्र नै सोची, ''आपण ही चलावां, ऊ तो न्हरो मोड़ो आवैगो।'' अस्यां सोचकै ऊ कार की ड्राईविंग सीट पे जा बैठ्यो। ऊंनै कार स्टार्ट करकै जस्यां ही आगै बधायी, कार की रेस पे पांव को दबाव जादा ही बढग्यो अर कार अेकदम सूं आगै भागी। रोड़ तो न्हरो चोड़ो छो अर ऊं टैम सांमै भी कोई कोईनै छो, पण रोड़ की बगल में आगै अेक लाईट को खम्बो छो। हड़बड़ाहट में कार ऊं खम्बा की आडी मुड़कै खम्बा सूं भड़भट खागी।

म्हारो मित्र चोटिल होबा सूं तो बचग्यो पण कार को आगै सूं मूंडो पचकग्यो। म्हारा मित्र कै तांई पिछतावो तो घणो होयो पण... अब होणी जे तो होईगी।

मिंतरो! ये अेक-दो घटणावां तो उदाहरण मात्र छै। मनखजूण में आपणै सांमै असी केई परिस्थितियां आवै छै ज्यां आपण उतावळापण में असी गलत्यां कर बैठां छां। जीं सूं केई बार घणो नुकसाण भी उठाणो पड़ै छै। ईं लेखै समझदारी तो याही छै कै खुद का सभाव में उतावळोपण छै तो ऊं पे नियंत्रण रखाणबो जरूरी छै। ईं लेखै ही आपणा बडा-बूढा मनख (स्याणा-समझणा) आपण कै तांई सीख देंवता हुंया क्हैग्या, ''भाया! उतावळो सो बावळो।''

◆◆

विवेक धन

आपणी देह इमरत अर म्रित्यु रो जोड़ है। देह मरणशील है तो देह में जिको लुक्योड़ो है, बो आमरण धरम है। देह म्रित्यु तो आत्मा अमर है। देह सै जीवण इंद्रियां रो भोग है तो आत्मा रो जीवण ईस्वर रो जीवण होवै। इंद्रियां असत होवै पण आतमा सत है। देह दिवलो है तो आतमा जोत। महत्त्व दिवलै रो नीं, जोत रो होवै।

विवेक क्रोध पर काबिज होवै, उणनै ठंडो करै। क्रोध तात्कालिक पागलपणो है। क्रोध, विवेक अर होस री हत्या करवावै। क्रोध रो सांग करो, पण क्रोध मत करो। क्रोध मूर्च्छा रै समान है। दरअसल मिनख दूसरां रा दुर्गुण जल्दी देख लेवै, गुण कोनी देखै। मन री चंचलता रो कारण परिग्रह अर परिचै होवै। जठै तक आपां इण दोनूं रो त्याग नीं करां, आपां नै ब्रह्म रो ग्यान कोनी होवै। संतजन परिग्रह अर परिचै सूं दूर ई रैवै। संत ब्रह्मचिंतन में मगन रैवै। ब्रह्मध्यान करण सूं ई कल्याण होवै।

(पोथी : 'जीवण री कळा' सूं साभार। संकलन : हंसराज साध)

प्रह्लाद श्रीमाली

सै सूं मोटी गैलसफाई

बस में भीड़ घणी ही! यूं कैणो ठीक नीं, क्यूंकै लोकतंत्र में बहुमत नै भावतो मान मिळता छतां भला मिनखां नै भीड़ भावै कोनी। अर आप भला मिनख हो। आ म्हैं आछी तरियां जाणूं। आप नीं मानो तो आपरी मरजी। म्हारो कांई जोर! पण अेक लिखारा सारू आज रा टीवी इंटरनेट अर मोबाइल जुग में पाठक सूं व्हालो कोई व्है सकै कांई? भलांई मुळको, पण मानो! कै आप भला हो। क्यूंकै जो वाल्हो सो भलो। ठीक है नीं! आ आपां री जुग-जुग री रीत है अर रीत अर परंपरा परवाणै चालणो संस्कृति नै सिमरध करणो है। तो आपनै भलो कैयनै म्हैं हेत अर हिंयाळी सागै संस्कृति रो पोषण कर रैयो हूं। आप जी म्हारै कैया मुजब खुद नै भला मान'र इण शुभ कारज में सहयोग करावो सा!

खैर! तो बस भरी-तरी ही। ठसाठस। सैण सांकड़ा ई भला। इण कैवत नै सार्थक करती थकी। क्यूंकै म्हैं सकारात्मक चिंतणियो प्राणी। चिंतण कांई म्हैं तो चिंता में ई सकारात्मकता नै खींच लाऊं। जबरदस्ती, माडाणी। सो म्हारो सकारात्मक चिंतन औ हो कै बस में म्हारा सूं अेकदम चिपकनै जो जातरी ऊभा है, वै सगळा आपसरी में अेक-दूजा रा सैण है। हिवड़ा में खुद नै सीट मिलण रो चाव पाळता थकां। वो यूं कै, कोई सीट खाली होवै अर झपाटाबंद फुरती सूं जो कोई भाई कै बैन बीं माथै बैठ जावै, उणनै कोई नीं ओळमो देवै अर नीं दुश्मणी पाळै। ईसको जरूर राखै। पण परमानेंट नीं, टेंपरेरी। खुद नै सीट मिलतां ई बीं सूं दीठ मिल्यां मुळकण लागै। अर भावना राखै कै दूजा ऊभा थका जातरुआं नै ई सीट जरूर मिलजो। ठिकाणै पूगण पैली-पैली।

ठिकाणो :
1, Vadmalai 1st Lane
Sowcarpet
Chennai
Tamilnadu
600001

 ISSN : 2320-0995

म्हैं बस में ऊभो-ऊभो जातरा कर रैयो हो। पण म्हारी दीठ भटक रैयी ही। साव आवारा बणगी ही कमसल। कणैई सड़क माथै दौड़ती तो कणैई बस में फिरती। ओपता उणियारां माथै बेसी टिकती। पण उणसूं बेसी जमती ओपरा चेहरां माथै अर म्हैं अटकळ लगावण ढूकतो। ओ मूंडो इत्तो ओपरो क्यूं लाग रैयो है! पछै आतंकित व्हैतो। कठैई म्हारी दीठ में तो कोई खामी नीं! अर म्हैं दीठ दौड़ाई—'जेबकतरों से सावधान!' बस में बारी ऊपरली जग्यां माथै लिख्योड़ो साव निगै आयो। तो अबै दीठ री कमजोरी वाळी आशंका नीं रैयी। इण पेटै म्हैं राजी होवणो चावतो हो। पण हिवड़ा रो राजी-खुशी वाळो चैनल जाम व्हैग्यो हो अर मगज में चिंता रो चैनल चालू होयग्यो।

'जेबकतरों से सावधान!' म्हैं फेरूं बांच्यो अर चारूं कानी निजर घुमाई। ओळी-दोळी रा घणकरा चेहरा में म्हनै जेबकतराई रो तत्त्व निगै आयो। पैली सगळा सैण लाग रैया हा। औ कांई कौतक! प्रशासनिक चेतावणी रो इत्तो अबखो असर! चिंता छतां म्हैं भेजो ठिकाणै राखियो। आकळ-बाकळ होय'र हाथ खीसा माथै राखण री गैलसफाई कोनी करी। यूं करतो तो खरोखर बस जातरा री जोखम बध जावती। आ हरकत देखण वाळां नै लागतो, इण बेली रो खीसो भारी है! जणै ईज तो आपरो मालमत्तो जांच रैयो है। नैछो कर रैयो है। इण खतरा सूं बच जावण री खुशी में मुळक्यो तो औ जबरो विचार पळक्यो। आ चेतावणी बांचण आळा सगळा लोग कांई सहजातरियां में जेबकतरा री छवि देख रैया व्हैला!

इण विचार सूं म्हैं नर्वसता रै पाळै में पूगग्यो। आजू-बाजू अठी-उठी डोळा फिराया। पारखी दीठ नीं होवण री पीड़ म्हनै चिड़ावती थकी मुळकी। कुण कांई सोच विचार कर रैयो है! आ परख राखतो व्हैतो तो यूं बस में हड़ैला क्यूं खावतो! मन अमूझण लाग्यो। इत्ता लोग म्हनै घेरनै ऊभा है। इणां में कुण जेबकतरो है अर कुण म्हनै जेबकतरो मान रैयो है? कियां ठा पड़ै! फेस रीडिंग री विद्या कोनी जाणण वास्तै मन महाराज म्हनै धुरकार्‌यो। म्हैं निजरां नीची नाख दी। डर लाग्यो, कठैई कोई फेस रीडर कनै ऊभो होसी तो! म्हारा थोबड़ा सूं कांई बांचसी! अबकाळै जेबकतरा ई जबरा प्रोफेशनल बणग्या है। साव राजनीतिबाज जैड़ा। मूंडो देखतां पाण जाण लेवै कै आसामी काम रो है कै निकामो!

राजनीति वाळा अर जेबकतरा अेक ठौड़ ई फेस रीडिंग रो कोर्स करे कांई! इण बाबत दोनूं अेकदम उस्ताद होवै! घणकरो यांरो अंदाज अेकदम ठीक निकळै, पण पर म्हैं तो साव अनाड़ी हूं। इत्तो ई नीं जाण सकूं कै अठै कुण म्हनै शिकारी मान रैयो है! अर कुण कमसल शिकार समझ रैयो है! इण चिंतन सूं म्हैं उदास होवण लागो। इत्तै में निजर पड़ी। पड़ी नी चढी। देख्यो कै जिण सीट सूं म्हैं सट नै खड़ो हूं, उण माथै विराजमान सवारी उतरण री त्यारी कर रैयी है। अेक मिनख रो सीट सूं उठणो दूजोड़ा खड़्या मिनख नै कित्तो सुख दे सकै! वाह! हिवड़ो आनंद सूं भरग्यो कै आनंद में डूबग्यो! जाणणो

अबखो। पण म्हारी चेतना में राजनीति वाळां री स्थिति चमकी। बस री सीट मिलण री संभावना म्हनै इत्तो सुख देय रैयी है, तो पछै राजनीति री कुरसी हासल करण रा सुख री सनक साव लाजमी है!

सीट राजनीति री होवो कै भरियोड़ी बस री। हासल करण पेटै पुरुषार्थ तो मिनख अर लुगाई सब नै करणो पड़ै। अठै सरकारी बस में लुगायां नै टिकट री पूरी छूट है। इण महानगर में महिलावां वास्तै बस में जातरा मुफत, बिलकुल फ्री। मतलब राजनीति री महिमा सूं पुरुषार्थ माथै महिलार्थ हावी है। वो यूं कै इण नियम रा जोर सूं लायण लुगायां नै भारी संख्या में बस री सवारी करणी पड़ रैयी है। जरूर परिवार रा पुरुष सरकार री इण निशुल्क सेवा रा सन्मान में लुगायां नै माडाणी बस रा सफर वास्तै मजबूर कर रैया है। पण सकारात्मक दीठ सूं देखां तो लुगायां रो मनोबळ मजबूत कर'र महिला सशक्तीकरण अभियान सफळ कर रैया है। वो यूं कै फोगट रा फंडा सूं करनै बस में लुगायां री संख्या मोकळी होवै। सौ सीट माथै बैठण सारू वां में आपसरी में संघर्ष ई जबरो चालै। भलो मिनख भागशाली लुगायां रो शक्ति-प्रदर्शन देख-देखनै देश रा उज्ज्वळ भविष्य रो भरोसो भारी करतो जावै। लुगायां भागशाली यूं है कै अेक तो फ्री में करै सफर। दूजी बात सीट माथै थापित होवण पेटै जीवट राखै जबर। खैर!

तो हुयो यूं कै म्हनै धकेलती कांई धक्को-सो मारती अेक नारी-शक्ति लारै सूं आय'र म्हारी ठौड़ पकड़ ली। साची बात करूं तो हड़पली। म्हैं कीं कैवण सारू बाको फाड़्यो, पण कैणो कांई! औ विचार करतो रैयो। इत्तै में खाली हुयोड़ी सीट माथै देवीजी आसण जमा दियो। म्हैं छानो-मानो रैयनै आपरो माजनो कमा लियो। ओखाणो याद आयो, जागता करतां ताकतो भलो! पछै बापड़ै मनड़ै नै समझायो कै लोकतंत्र में संख्या बळ रो जोर घणो। अैड़ा में बहुसंख्यक लुगायां री हाजरी में ताकण वाळो काम भोळा अर मोळा मिनख वास्तै जबरदस्त जोखम रो होवै। मन समझदार बणग्यो। ज्यूं स्वार्थ अर आत्म-सुरक्षा रा सवाल माथै भयंकर विरोधी राजनीतिक दळ ई आपसरी में समझ जावै। राजनीति रो जीवण सूं इत्तो मेळ देखनै धन्य होयग्यो।

बस सूं उतरतां ई म्हैं खुद नै साव हळको मैसूस कर्यो। अेकदम फोरो-फूल। घणी संख्या में माथै पड़ता मिनखां रा भार सूं मुगती पावण रो परसाद है ओ! विचार करनै मुळक्यो। पण खीसा माथै हाथ पड़तां ई तन-मन तुरंत भारी पड़ग्या। औ कांई हुयो! खीसो खाली हो। जाणै चुनाव हार्योड़ी पार्टी रो कार्यालय। बटुओ कठै गयो! कुण मारियो म्हारो पर्स! कठैई धक्को देवण वाळी उण धाकड़ लुगाई रो तो औ काम कोनी! दबंग ही, पण वा अैड़ी लागती तो नीं ही! सोच्यो, अर खुद री नादानी माथै उदासी सागै मुळक्यो। बस तो गई,अबै कांई करां!

''कांई बात है? आप यूं हाकबाक क्यूं हो रैया हो!'' म्हारा खवा माथै हेत भरियो हाथ राखतां अेक मिनख पूछियो। सकल पिछाणी-सी लागी। अरे! बस में म्हारै आसै-

पासै खड़्या लोगां में अै भाईसा पण ऊभा हा। कित्ती ई बार तो बस रा धचका सूं अेकदम म्हारै माथै ई पड़ग्या हा। म्हैं ओपराई सूं पूछियो, ''आप कूण?''

''म्हैं अेक हस्त कलाकार हूं अर जेबकतराई रा खुद रा हुनर नै परखण पेटै म्हनै आपरो खीसो सेफ्टी जॉन लागो, मतलब सुरक्षित क्षेत्र! म्हैं सदीव म्हारी इण कला रो सफळ प्रदरसण कर्‌यो है अर प्राप्त राशि-सामग्री पारिश्रमिक-पुरस्कार भाव सूं स्वीकार करी है!'' कैवता थकां उण रा चेहरा माथै आत्मविश्वास अर स्वर में सम्मोहक आकर्षण हो। जाणै कोई पाको ठावो नेता आप द्वारा वुई जनसेवा रो विवरण देय रैयो है।

म्हैं उण रा व्यक्तित्व सूं प्रभावित होय रैयो हो। छतांपण मन में खटको हुयो। म्हारो पर्स इण तो नीं उडा लियो! पण लियो व्हैतो तो म्हारा सूं बात क्यूं करतो! होय सकै इण रा प्रतिद्वंद्वी किणी दूजै जेबकतरे पर्स लियो होवै। प्रतिद्वंद्वी रो बैंड बजावण री वा ईज राजनीति री जूनी जाणीती चाल खेल रैयो है ओ! सोच'र म्हैं कटाक्ष भाव सूं बोल्यो, ''फरमावो, कांई सेवा करूं आपरी!''

''जिण सीट माथै आप आराम सूं बैठ सकता हा, वा आप अेक लुगाई सारू छोड दी। औ देख'र म्हैं जाणग्यो कै आप भला मिनख हो। आपरो बटुओ पाछो करण वास्तै म्हैं ई आपरे सागै बस सूं उतरग्यो हो!'' कैयनै उण बटुओ म्हनै सूंप दियो। निर्विकार शांत भाव सूं। जाणै कोई संत-सज्जन लादोड़ी वस्तु उण रा धणी नै सूंप रैयो होवै। बटुओ लेंवता थकां म्हारै मन में चोर कै संकोच हो! म्हैं उणनै क्यूं नीं बतायो कै सीट म्हैं दी कोनी। उण लुगाई आपरी शक्ति सूं हासल करी ही।

म्हैं चमत्कृत हो। म्हनै वा लोककथा याद आई, जिणमें साधु री संगत में आयोड़ो अेक चोर साच बोलण रो व्रत लेय'र चोरी करवा जावै।

''जनता री जेब काटण रो काम कर रैया हो! तो पछै राजनीति में क्यूं नीं गया?'' व्यंग्य करता थकां म्हैं उणनै म्हारी समझ सूं ठावको रस्तो सुझायो।

''क्यूंकै राजनीति में सै ठौड़ साच कोनी चालै अर म्हैं साच नीं छोड सकूं!'' सुण'र म्हारा मन में उणरै पेटै सरधा उपजी।

''आप कांई करो?'' उण पूछियो।

हड़बड़ी में म्हैं बीं नै आपरो कार्ड पकड़ायो। पण चेतो आवतां ई निजर मिलावण सूं बचियो, क्यूंकै खुद री ठरकाई बाफण सारू म्हैं कार्ड में अेक राजनीतिक पार्टी रो सक्रिय सदस्य होवण री जाणकारी ई छाप नाखी ही। औ सत्यवाद रो खरो उत्पाद अबै म्हारी बाबत कांई सोचैला! म्हनै आ राजनीतिक हुंसियारी म्हारी सै सूं बडी गैलसफाई लाग रैयी है।

◆◆

सत्यदीप

गोडां घड़ी

दादी सदां ई कैवता हा, साच नै सराप कोनी कूड़ जिसो पाप कोनी। गोडां घड़ सरकाणी, काची रोटी खाणी। पण बाळणजोगो जी हुवै ई मिजळो—प्रीत करै तो साव कूड़ सूं अर सरकावै तो साव गोडां घड़ परी। जगती रो तो कैवणो ईज है कै बा तो चढ्यै नै ई हंसै अर उपाळै नै ई।

गोडां घड़ गुरबत नै चितार करतां चित में आवै गांव साव गांव बरगो। इण गांव में स्हैर रो रूंवो-धुंवो ई नीं लखावै। जिण में बसै जस्सो जागणियो। उमर तीन बीसी सात। किती साच जाणै जागण सुणै जका। बातां नै मठारणो अर मठार-मठार'र पुरसणी। भजनां बिचाळै सटकावै गोडां घड़ी तो लखावै जाणै साव साची। अब उण दिन जद भभूतै जी रो जागण हो, अधराती भजनां री रागणी रमकै ही पण सुणणियां री आंख्यां ओलरीजै ही अर नाड़ां लपका लेवै ही। नींद रो बिजोग भजनां बिचाळै, जस्सो लखग्यो कै रांगण बिगड़सी। छैकड़लै अंतरै नै ढोलक री जबर गड़गड़ाट बिचाळै सांवटनै भजन नै बिसाईं देय पूरो करग्यो तो उबासी तोड़ती भीड़ छैकड़ली ढोलक री थाप सूं चेतो लियो। जस्सो भजन छोड बोल्यो, ''देखो भाईड़ां, भजनां बिचाळै नींद सारी सभा बिगाड़ै, राफ्यां टेरग्यो बींद ब्यांव रो भो बिगाड़ै । छोटा तीखा बैण भला-सा संबंध बिगाड़ै। होय तूंबण री बेल खेत री फसल बिगाड़ै। बिगाड़ै घर रो जाम जद कुबध कमावै। ठरकै टूटी तान राग नै अवस बिगाड़ै। भजनां बिचाळै नींद नै भगावो अर आपणै इण गांव री अेक बात सुणो, म्हारो दादो बताई ही—धुंई हथाई में चालती

ठिकाणो :
'अपनत्व'
वार्ड नं. 24, आडसर बास, श्रीडूंगरगढ़
(बीकानेर) राज.
मो. 9460905951

झिगत में। चाय आवै जित्तै सुणो, आपणै गांव री बीती बात।'' अब जस्सै री गोडां घड़ी पोळाई जी बातां रै छमकै रो सवाद मन मोवणो। जस्सो बोलै हो, आखी संगत सुणै ही। जस्सो कथा पोळाई :

जद आपणो गांव, दो-ढाईसौ घरां री बस्ती बसेवै रो हो। न्यारी-न्यारी जातां पण हेत हथाई जबर। अेक री दूसरो सांवठी राखै खबर। पीड़ रा फोड़ा बळ पड़ता सगळां रा साझा। होळी-दिवाळी, तीज त्यूंहारां रामा-सामी आखो गांव अेक-दूजै सूं करतो हरखीजै। मरजाद में भेदभाव, भेदभाव में भी मरजाद जींवती। गांव री छोरी रै सासरै बा बेटी आखै गांव री हुवै औ धरम सगळां रै पल्लै री गांठ। तो स्याणो बात बताणी ही बीत्यै बगत री। जद दादो टाबर ई हा। धुंई पर बैठ्यां नै हेलै साथै पाणी री डोली झलाणै रो काम दादै रो। चिलम सारू धुंई में खरसेलिया सिरकाणा अर धुरकोट सूं सूखो सिणियो अर चिरमली ल्याय बासतै जगतो राखणो। कदै-कदै पसवाड़ै बेठ्यै अदूलै काकै नै साफी बायरी चिलम पकड़ाणी। चिलम सगळा री पण साफी न्यारी-न्यारी। म्हांटी आ कियां! दादै रै गताघम सदा रैयो हो टाबरपणै में। तो भाईड़ां, दादो बतायो, अेक दिन धुंई माथै बास-मोहल्लै रा मोकळा मिनख बैठ्या बतंळ में हाको-सो करै हा। दादै रा बापू सगळां नै बतावै हा, कै गांव रै जूनै ठाकुर जी रै मिंदर री आरती पछै पंचायत होवणी है, मंगळवार री। बा होसी—सेठां रै घोड़ी आळै नोहरै में। बठै ठाकर साब आपरै गांव सूं आसी। सेठ भूरसिंघ जी अर गांव पंच रूपसा होसी। साथै हरेक कड़ूंमै रा मोजीज मिनख भी उण पंचायत में रैवणा पड़सी। आज दीतवार सूं ई तंबू ताणीजै लाग्या अर साफ-सफाई जोरां-सोरां। खबर आ भी है कै अन्नदाता आपरै कंवरसा साथै घड़ीखण आपां सूं मिल कीं भली खबर देसी।

''लै आयग्यो सेखै नै भातो! मोरां करड़ी करल्यो। अन्नदाता रो आवणो, बेगारी नै ल्यावणो। घेरो घोड़ा घूघरियै ताल में। फंससी ज्यान अबकै फैताळ में।'' कुबधी अबधो बळती में पूळो-सो सरकायो।

''ना रे अबधा, अबकै बिरतन की भलेरो अर अलायदो है। सेठां कानी सूं गांवगोठ भी राखीजी है। कोई नूंवो तोजो लखावै। आपणी तो जीभ लसरका लेवणी है। सीरो घुटसी। बडो कड़ाव कालै सूंवो करीज्यो हो। म्हैं म्हारी आंख्यां सू देख्यो है।'' कानो जी खाती दादै रै बापू नै बतायो।

अबधो फेरूं ई बिस्वास्यो कोनी, ''कीं कोनी रे भायां, हुसी जकी चवड़ै आसी। नाई-नाई केस कित्ता, कै सेठां थ्यावस राखो अबार लप करता धरत्यां आ जासी उस्तरै रै भेळा!''

खैर भाईड़ां! उण दिन री धुंई पंचायत तो खिंडगी ही। गांव में नूंवी खुसर-पुसर पून रै समचै डोला खावै ही, कै होसी, क्यूं होसी, अर कियां होसी री पातळ्यां गिरणी

चढै ही। भींयो दादो बतावै हा, ''घोड़ी आळो नोहरो मंगळवार नै रमक-झमक सजाणै री जुगत करीजसी। फरत्यां अर लड़लूम लगासी। कनातां तणसी। पछै ठाकर साब अन्नदाता री जुहार करासी। आखो गांव आपरै बूथै मुजब अन्नदाता नै जुहार कर भेंट भुळासी।''

जस्सो जागणियो आपरै अंदाज में बातां रो बघार छमकै हो अर जागण में भेळा हुयोड़ा मिनख उणरो रस लेवै हा। आ सभा मोवणी तो जस्सै जागणियै री खास कळा ही कै बो खिंडती भीड़ नै जाग्यां माथै टिकणै सारू मजबूर कर देंवतो हो।

बात बिचाळै चावड़ी री गिलासां रड़भड़ी तो चालती बात में बिजोग तो आवणो ई हो। जस्सो गोडां घड़ नै थोड़ो बिसराम दिराय, चावड़ी रा चसड़का लेवणै रो कैय दियो। मिनखां बात पूरी करणै रो तकादो करयो तो बांनै थमणै अर खुद नै थोड़ी सांस खावणै री ताकीद करी। चाय पीयां पछै ठुंगार में बीड़ती रो सुट्टो अर जरदै री थापी थोड़ी देर खड़बड़ी। पछै जस्सो आपरै हारमोनियै रा सुर सांभळ्या तो सगळा टोक्यो, भाया बात पूरी करो, पछै भजन उगेरया। बात बिचाळै घांदो अर गवाड़ बिचाळै कादो, घणो दुख देवै।

जोरको-सो खंखारो कर जस्सो अधूरी बात रो सिरो झाल पाछी टोरी :

तो भाईड़ां म्हारलै दादै आपरै दादै सूं सुणी बा बात आगै चालै तो भली करै भगवान। बात री बात आखै गांव में अन्नदाता रै पधारणै अर उणां रै मान सारू कै, के अर कियां होसी री दोघड़ चिंत्या बिना बळीतै रै हारै री हांडी में जाणै खदबद पाणी उकळै। राखसी टेक अब तो सांवरियो। राजी रजवाड़ो बगसै मोहरां, बळतो रजवाड़ो बळा देवै गांव। गांव री बूढी-ठेरी, अधखड़-जवान लुगायां भी भेळी हुवै तो आ ईज चरचा अर मिनखां रो गट्ट रळै तो बातड़ी अन्नदाता रै गांव आवणै री। अठै अेक बात कीं सावळ हुई। सेठां गांव रै जवानां नै पावली मजूरी अर दो बगत जिमाणै पेटै गांव रो भो सुधारणै सारू लगा लिया हा। गांव में पांचू जात रा प्रधानां नै सिंझ्या पंचायती पींपळ हेटै भेळा हुवणै रो बुलावो भळै दिरायो। पंचायत पींपळ हेटै बात आखै गांव रै मोजीजां नै बताईजी, आपाणै गांव अन्नदाता पधारसी, भाग सरावो गांव रा। इत्तै छोटै गांवड़ै में अन्नदाता रो आवणो भागवाळा नै लाधै, नींतर दाता तो ठाडा गांवां में ई आपरा घोड़िया नीं बांधै।

''भाग तो भुंवाळी खाता लखावै!'' अबधो धीरै-सी सारलां रै खूणी रो ठरको देंवतो धीरै-सी सुरसुरी छोडी। भीड़ फिस्स-फिस्स हंसी रो बायरो फेंक्यो।

सेठ चमक'र बोल्या, ''के घोचो है, सावळ बात सुणो। बंदोबस्त पूरो है। गांवगोठ में आपां नै गांव में अन्नदाता रेलगाडी रो तोहफो देसी।''

''हें! रेलगाडी? आपां नै तोफै में मिलसी, तो सेठां बांधस्या कठै, नीरा-चारी कुण अर कियां करसी? बा तो हिसार आळी दो भैंस्यां सूं बत्ती ठाडी हुवै सेठां!'' अबधो फेर कुचरणी पोळाई, सेठां नै रीस जबरी आई पण ढाबी। सगळा रै मुंहडै हंसी रा गड़ा-सा पड़ै हा। सेठ करड़ी मीट सूं अबधै नै देख्यो तो सभा भी सांयत हो ली।

सेठ बोल्या, ''बातड़ी समझ्या कर अबधा! हरेक जग्यां ठठो नीं करणो। सुणो सगळा, आ रेलगाडी जकी है बा गांवतरै जावणै सारू रेवाड़ी सूं आसी राजगढ़, रतनगढ़ होंवती रजवाड़ै पूगसी। बीं रेलगाडी रो अेक टेसण आपणै गांव भी थरपीजसी। म्हनै जित्ती जाणकारी है, आ रेल री लैण गांव रै दिखणाद भभूतै जी री ओरण में सकर कुवै रै नेड़ै धरीजसी। बठै ई टेसण री थापना होसी। गांव नै आणै-जाणै रो, मुसाफरी रो जबरो सुभीतो बापरसी।''

''सेठां, म्हैं बोलूं... ?'' अबधो फेर बोल्यो।

''हां बोल भाईड़ा, बात करणै सारू ईज तो आपां भेळा हुया हां।'' सेठ बोल्या, ''हां कैय न्हाख अबधा, म्हांनै ठा है, निकळसी तो कुजरबी ई थारै मूंडै सूं...।''

''ना, अबकै बात कीं ढंग री है। भायां, थे जाणै हो मुसाफरी तो बतावो कुण करै आपां मांय सूं? बस खाली सेठ-साऊकार ई तो करै देस-दिसावरी। आपां तो बस खेत अर सारलै गांवड़ा तांई करां। आपां कनै ऊंटगाडा है तो क्यांरो सोच! गया अर आया। घणी हुई तो रातबासो परसंग्या रै बठै कर लियो। औ तोजो रेलगाडी रो फेरूं। कावळ बात कोनी के काका?'' अबधो भीड़ रै अेक मिनख नै बतळायो।

बो काको भी अबधै री बात नै आपरी पुट दी, ''अबधै री बातड़ी तो साच है भाईड़ां, म्हैं भी सुणी ही। रेलगाडी भोत कुराणी चीज हुवै—लांबी लरड़। काळोकुट्ट काळ बरगो आगै खेंचणियो इंजन, जाणै मदवो हाथी। चालै तो गरड़-गाजती करड़ छुक, गरड़ छुक काळजो फाड़ दै। बताणिया बतावै, बा आवै जद धरती धूजै। उणरी सीटी कोसां सुणीजै, जे कोई नेड़ै हुवै तो कानां रा पड़दा फाड़ न्हाखै।'' काको बात बताई तो घणकरा डरूं-फरूं सा हुग्या। सपसपाट-सी भीड़ में पसरै ही। बातड़ी तो म्हांटी का'ली है।

''ओर आगै सुणो, ओरण गांव रै चिपती, धन पसुवां रै चरणै रो ठावो ठांव। रेलगाडी निकळसी तो खड़-खटाच सूं चिमकनै चरणो भूल चमक परी गाडी हेटै आय कूकरियो-सी कट जासी। गांव रै सारै रेल, ना सेठां समझो बातड़ी। जे घर गिरस्थी में छोटी मोटी राड़ हुयी तो रांडी-रंडवा भाग छूटसी, का कट मरसी। क्यूं भाईड़ां, है कै नीं है आ बात!''

काकै री बात तो साव सवा सोळाना साच। ओ फोड़ो तो आपां सोच्यो ही कोनी। आ रेलगाडी तो रोळो घालसी। आखी भीड़ सेठां नै समझावै। ना सेठां, आ पोसायत री बात कोनी। 'गांव हाण लोगां हंसी' री बातड़ी हुवै। थांरै सुख सारू थे आखै गांव रै भाग में फोड़ा लिखणै री बही घाल दी। बियां ई थारली बही म्हारला अंगूठा जीम राख्या है। अबकाळै तो थारी बही नसड़ी बाढ न्हाखसी। आखी भीड़ रो हाको सेठां रै जाणै घेरमोड़ियो घाल लियो हुवै। अेकरसी तो जाणै सेठां रै पगां हेटली सिरकगी। पण बेटो बाणियै रो, हेटो बख पड़तां आवै कोनी। हेटै जे पड़ भी जावै तो टांग आपरी ऊंची बतावै। सेठ बातड़ी पाछी सांभी।

''देखो भाईड़ो! बात थांरी सिर माथै, म्हैं कोई गांव सूं न्यारो थोड़ै ई हूं, थांरै फायदै सारू म्हैं अर ठाकर सा अन्नदाता सूं अरज करी ही। बै तो आठ कोस पसवाड़लै दिखणादै देवळियै गांव सूं रेलगाडी निकाळै हा। आ तो म्हारै अर ठाकरां री अक्कल पर पटकी पड़गी ही। म्हारो कोई स्वारथ को हो नीं। अन्नदाता गांव रै भलै सारू ईज हां भरी अर तै कर आपणै गांव नै रेलगाडी रो टेसण बगस्यो हो। अन्नदाता री बात तो भाटै री लीकटी हुवै। बोलो कुण डोवणै री कुबत राखै। कोई है, थां बिचाळै भींयो बलवान! बोलो, अन्नदाता नै उतर देवणै री ताकत कुण केवटै? म्हैं तो पसवाड़ै हो लेस्यूं, थे ढिकाड़सिंघ आ लिया अर राख दिया थांरी भेळी बात।''

जाणै चिड़कल्यां में भाटो पड़ग्यो हुवै। चूं-चप ही को सुणीजै नीं। अधरातियो सोपो-सो पसरग्यो धोळै दोपारै। सेठड़ै म्हांटै आछी पजी घाल दी।

अबधो फेरूं कुचरणी करै, ''आयग्यो नीं सेखै नै भातो! घलगी नीं गळै! ल्यो लसरका तातै सीरै रा। सिंघ नै झाल्यो स्याळियै, जे छोडै तो खाय। अब ठा पड़सी जद मोरां कोरड़ा पड़सी।''

सळबळाट कीं मगसो पड़ लियो तो मिंदर रा पुजारी गणेस दादो सेठां नै समझांवता बोल्या, ''देखो सेठां! अबढी पजी है। रेलगाडी तो दाता जठै मरजी बठै सूं निकाळसी, उणां रै जच्यां थारली हेली री छात उपरियां निकाळै तो कुण बरजै। जे सूंवै गवाड़ सूं छान-झूंपां किचरती बगसी तो रास कुण थामणै री कुबत राखै। अब तो रस्तो काढणो है सेठां आपां नै। गांव सुख पावै अर रेलगाडी भल गांव में आवै। अन्नदाता रो राजी रैवणो भी जरूरी, नींतर आपां खालसै होंवतां कै बगत लागै। कीं सूंई सोच्यां ई गांव रो भलो हुवै।''

''तो थे ई बतावो दादा, के करणो चाईजै?'' सेठ अब कीं ससवां होयनै सांस ली।

दादै आपरी समझ सूं राय दीवी, ''देखो सेठां, आप अर ठाकर सा रळ'र अन्नदाता सूं अरज करो। गांव रै दुकासै री पाळ आळै ताल सूं गाडली निकाळ लै, बठै ई गाडी रो टेसण थरपलै। गांव नै सगळी सोराई होसी। म्हे गांव रा भी हाथाजोड़ी कर अरज करस्यां।''

''ठीक है, ठाकरां सूं म्हैं बात कर अरज राखसूं। थांनै भी पग पाछा को देवणा है नीं।'' सेठ बात सांवटता बोल्या।

आज री पंचायत पूरी हुयी। सगळा आपरै हिल्लै लाग्या।

❑❑

दिन जातां किसी देर लागै। शनि अर दीत तो ढळता दीस्या। सोम रा भखावटै ई गुमानो कोटवाळ आपरी ढामकी माथै गांव में हेलो फेरणो पोळायो—

''गांवगोठ कालै होवणी है! अब गांव नै छुक-फक गाडी रो दान करीजसी। अन्नदाता रा जुहारणा अर गांव सरै रो जीमण सेठां कानी सूं। सिगरी पधारणो है! सगळो सरजाम घोड़ी नोहरे में है!''

गांव री लुगायां रै हरख बधावणा। मस्सां अेक दिन गोरखधंधै सूं बाळै पिंड छूटसी, थोड़ी आपस में हती-तती रो बगत भी निकळसी। मांयलो बफारो जबर निकळसी, साथै जीमनै रळी काढणो। टुकड़ां सूं तो राफां आखी जिंदगी छोलणी ई है। कदै-कदास पेट रा सळ काढणै रो ढब पड़ै।

अन्नदाता रै पधारणै रा पोड़ बाजै हा। सोमवार री सिंझ्या गांव ब्यांवली बीनणी सो सजधज त्यार हो। सेठां री दो बळदां आळी बेहली सजाय राखीजी। पेड़ां में तेल पाईज्यो। बेलियां रा मखमल रा झूलरा बारै काढ धरीज्या। गांव री गळ्यां में पाणी रो छिड़काव भी करीज्यो तो घोड़ी नोहरै रै आसै-पासै केवड़ै रै पाणी रो छिड़काव जबर हुयो। गांवआळा दांतां आंगळी दाबली ही। आसै-पासै री ढाण्यां रा लोगड़ा भी आय ढूक्या। आछो मगरियो सो मंड लियो हो, भोळै-सै गांव में। भखावटै मिंदर री आरती थोड़ी बेगी करीजी। पून में फरत्यां री फरफराट आपरो रंग जमावै ही तो दूजै पासी लोगड़ा भी आपरै आछै कपड़ा सू करड़धज हो रैया हा। लुगायां पेवटी में राख्या बार-त्यूंहार पेरणिया गाभां में रमक-झमक होय घूंघटै नै हाथ री आंगळ्यां ओट ओलो कर देखै ही। तखता जोड़ उण माथै दरी-जाजमां बिछाई जी। अन्नदाता सारू सेठां री हेली सूं चांदी जड़ी कुरसी राखीजी, बाक्यां सारू रुतबै सार बाजोट बिछाईज्या।

अब देखो भाईड़ां! जिसो गांव उण मुजब बळ पड़ती बैवस्था बणी, पण बणी जस्सो जागणियो बतावै अर सुणणियां नै रस आवै। तो आगै भाईड़ा दादो बताई कै उण दिन गांव रो गीरबो लागै आज लाखीणो हुयां सरसी। अबधो छेड़ै हो मूळै माळी नै। वगतसर अनदाता बेलियां री बेहली में ल्याया गया। अन्नदाता री फिटन तो गांव री रेत में कियां आवै। अन्नदाता पधार आसण बिराज्या। गणेस दादो मिंदर रै चोपड़ै सूं तिलक कर घणी खमा अन्नदाता री, मेहर लिखमी रै नाथ री अर जैकारो भोमियै महाराज रो बोल पवितरी रो छांटो दियो। सगळा आपरै बूथै सारू जुहार, 'घणी खम्मा अन्नदाता' करता कमर दोवड़ी कर्‌यां नीची नाड़ लियां भेंटां देवै हा। दाता हाथ लगा हाजरियै नै सांवटणै रो इसारो करै हा। दोवूं हाजरिया फटाफट आयोड़ी भेंटा सांवटणै में घणी फुरती करै हा।

छेकड़ बारी आई सेठां री, सेठ मखमल री कोथळी में सोनै री गिन्यां री निछरावळ करी। अन्नदाता कोथळी आपरै हाथां में झाल ऊभा हो लिया अर सेठां रै बांथ घाल गळै मिल्या। आपरै हाथ रो चांदी रो कड़ो काढ सेठां नै पैरायो। आखो गांव जै-जैकारां सूं आभो गुंजाय न्हाख्यो। गांव रै भाग में तो जाणै सोनै रो सूरज ऊग्यो हुवै। सेठ आज

अन्नदाता रा कड़ा बगस भाई थरपीज्या। राजाजी अणूता राजी होय आपरी बात बताई कै ठाकरां अर सेठां रै कारणै आपरै गांव नै गाडी री बगसीस मिली है।

अचाणचक अबधो हाथ जोड़ ऊभो हो लियो।

''अन्नदाता, घणी खम्मा! अरज है हाथ जोड़, गांव तो संकतो बोलै कोनी, पण आ सगळा री चावना है कै आप भलो करयो रेलगाडी गांव नै बगसी, पण अरज आ है कै आप गाडी री टेसण ढाई कोसी पाळ कनै राखो। गांव रै पसुधन अर मिनखां री सौरप रैयसी।''

अेकरसी तो अन्नदाता री आंख्यां में रीस री लै'र ऊपड़ी पण सांयती धार बोल्या, ''आज म्हैं अणूतो राजी हूं। माफी बगसी, नींतर आज थे खालसै हुयां सरता। थारै करमड़ै में फोड़ा है तो सासण कै कर सकै है। अब रेल बठै सूं निकाळ देस्यां। थे जाणो अर थांरा करम जाणै। सेठां! थे सांभो थारो गांव, म्हनै गढ पूगणो है।''

सेठ अन्नदाता रै अरोगणै री जुगत हेली में राखी ही। अन्नदाता अर कारू-कारिंदा हेली में अरोगणो करयो, सीख-सिलामी लेय राजधानी कानी टुर लिया। गांव राजी सीरै रै सबड़कां, सेठ राजी अन्नदाता रै कड़ै बगसी रै खड़कां अर अबधो राजी अन्नदाता सूं बंतळ रै फड़कां! पण गांवआळा रेल दुकोसै-ढाई कोसै पर पाळ ढाळ कै बडकां रो नांव काढ लियो। आज फोड़ा भुगतै। जस्सो आपरी बात पूरी कर पाणी रो लोटो गळगळ करतो पूरो गटक लियो। पछै हरमोनियै पर पाछा भजनां रा सुर सांभळ्या। सुणणिया बतावै हा, वाह रे भाई जस्सा! जोर सरकाई गोडां घड़ी। जाणै साच साम्हीं परतख आय ऊभगी हुवै।

जस्सै री राग सोरठ गमकै चढै ही।

◆◆

आतमधरम

त्याग जीवण रो ऊंचो फुठरापो होवै। संयम उत्थान रो पैलो चरण होवै। आज मिनख अलेखूं विकळपां में जीवै। संकळप कर लेणै सूं विकळप छूट जावै। संकळप अर समरपण रै मारग पर चालणै सूं ब्रह्म री प्राप्ति सरलता सूं हो जावै। जीवण में लक्ष्यबद्ध काम करणो चाईजै। धरम प्रेम सिखावै। धरम जोड़ै। संप्रदाय तोड़ै। धरम झुकणो सिखावै, संप्रदाय अकड़णो। धरम आतमगत आंतरिक होवै। थोप्यो कोनी जावै। धरम पलटावणिया भूल रैया है कै आतमा रो स्वभाव धरम होवै। स्वभाव त्रिकालिक होवै, बो बदळै कोनी। आपां नै धरम बदळणै पर नीं, हिरदो बदळणै पर जोर देवणो है जिणसूं कल्याण हो सकै। परिग्रह लारै भाजणियो बावळो होवै पण परमारथ रै लारै भाजणियो परमहंस बाजै।

(पोथी : 'जीवण री कळा' सूं साभार। संकलन : हंसराज साध)

पुनीत कुमार रंगा

अेक दरखत

अबखायां-उळझाड़
कीं बीजी
माथाफोड़ी रो
अेक दरखत
क्यूं है
म्हारै मांय
हरयो-भरयो
रातो-मातो
कांई म्हैं ई
सींच्यो हो इणनै
बगत-बगतसर
करण-पूरण
मन माफक
जीवण-जथारथ री
आडी-टेढी
आड्यां नैं
या
कीं बीजी
मनचिंती सारू।

ठिकाणो :
सुकमलायतन
डी-96-97, रंगा कोठी
मुरलीधर व्यास नगर
बीकानेर (राज.)
मो. 9829138001

कैवो हो कोरो ठूंठ

क्यूं हांसै है
अै पीळा पात
झड़ण री बेळा
पावै मुगती
आवण नैं पूठा
करण नैं काया-कळप आपरो
अर सागै ई
म्हारी नंग-धड़ंग काया रो
जिणनै थे
कैवो हो कोरो 'ठूंठ'
उणी 'ठूंठ' नै पूठो
रातो-मातो
हरयो-भरयो
अै ई करै
पीळा-पात
आपरी कंवळी-कंवळी
सोवणी-मोवणी
पत्त्यां रै रूप में।

सावचेत रैयज्यो

अबोलो दरखत
ऊभो है
आपरी ई धुन में
चालतो बायरियो
कर जावै
कीं कान-कुड़कली
दरखत रै
डाळ-पत्त्यां रै
कै सावचेत रैयज्यो!
दरखत रा बैरी
करै हा सिट-पिट
थारै ई पेटै
म्हैं नीं चावूं
छूटै म्हारो संग
थारै सागै रो।

हर दरखत

दरखत-दरखत
पात संग पात
करै आपस में
कीं घरबीती, कीं परबीती
आ ईजबात-बंतळ
सावळ सुणणी चावै
हर दरखत
लगा'र कान
पण
कांई सुण पावै
कांई समझ पावै
हर दरखत आपरै ई
डाळ-पनप्यां पात री
बात-बंतळ
जिणनै
स्यात सावळ अरथावैला
आपरै सबद-अरथां में
जणैई कीं
पात-पात री बात रो महत्त्व
समझैला दरखत अर
हरखीजैला पात-पात।

◆◆

ISSN : 2320-0995

सपना वर्मा

आग अर पाणी

दीसण में
अगूण आथूण ज्यूं लागै
आग अर पाणी
पण
पाणी मांय
आग हुवै
सगळा सूं पैली
आग आळै गोळै ई
लगाई होसी
आ आग
पाणी मांयनै।

दिवलो

चाक घूमै
जद अेकली
माटी नीं घड़ीजै
माटी रै सागै
घड़ीजै
कुंभार री
हथेळी आळी दाब
आंगळियां रै

ठिकाणो :
गांव-गंधेली
तहसील-रावतसर
जिला-हनुमानगढ़
राजस्थान-335523
मो. 7219915312

पौरां रा निसाण
परसेव री
छांट्यां सागै
आस रो आभो
उणरी चतराई
उणरी कलाकारी रो
हिस्सो ई तो है
औ जगमगावतो
दिवलो !

सिणगार

गांवआळी
गळियां
कदैई
नाक री डांडी
सीध आळी
सड़क
नीं होय सकै
बधवां चौकी
घरां रा
खांगा बारणा
बारै दीसतो कंवळो
नाळी पार कर'र
गळी सूं मिलता
रैम्प अर पोड़ियां
आंकी-बांकी भींतां
आगीनै बध'र
निवण करती
दुकानां आळी टीणां
औ सगळो
सिणगार ईज तो है
गळियां रो
जिणनै देख'र ई तो
गांव मुळकै
गांव रै जींवता थकां
गळी आपरो सिणगार
कियां छोड सकै ?

धरती घूमै

कदी ऊंडी कांपै
आखड़ै भाखर
कदै नदियां उफणै
पून बिचळज्यै
कदी समदर छळकै
पण बा
थमै नीं कदैई
आं अबखायां सूं

जाणै है कै
दिनूगै सूरज नै
पूरब में उगणो है।
◆◆

ISSN : 2320-0995

किरण राजपुरोहित

मायड़ भासा मान

सजी माथ मुगट-सी, सदियां पायो मान
लोकतंत्र रै आवतां, खूणै बैठी लाण
खूणो कुण खोलावसी, कुण करसी रिखपाळ
परता कुंभा रै देस में, चीर हरण री चाल
किसो किसन सुणसी अठै, किणनै करै पुकार
सिरोळा री सासू रो, (व्है) उखरड़ै मुकाण
सोधै भासा ठाइयो, टिकै जठै वा जाय
बिन ठायै रै ठिरड़ती, कोई लात लगाय
कूड़ा सै कानूनड़ा, राजनीति रुळियार
साव साम्हीं लुट रैयी, रजथानी गळियार
थोथा गाल बजायकै, माडै जस क्यूं गाय
साचा है सपूत जे, मान दिराय बताय
अब छैली सांसा रह्यी, बजती जकी अखूट
गेमै गेमै करतां गई, सत्तर बरसां खूट
कूड़ काच देखो मती, पूरी कर पड़ताळ
भासा गोदी में रह्वै, पूरी लालन-पाळ
भासावां री माळ में, हर भासा अणमोल
पण मायड़ रो मान है, सगळां सूं घणमोल
भारत माळा अमर है, मिलै'ज भासा मान
मायड़ भासा है सिरै, मासी बीजै थान
माळा राजस्थान री, मायड़ भासा माण
भाण अस्त भासा अबै, चूके जे चौहाण

◆◆

ठिकाणो :
सी-139, शास्त्रीनगर
जोधपुर (राज.)
मो. 7568068844

पूनम चन्द गोदारा

पांच गजलां

(अेक)

बातां अब सगळी कैवण द्यो
मन बैतरणी नै बैवण द्यो
जीव अमूझै बेली म्हारो
सांस निसांसी लेवण द्यो
बस थे थारा फाड़ो-सीड़ो
दूजां सूं मतळब रैवण द्यो
जीवो थे थांरा सुख रा दिन
म्हांनै म्हारा दुख खैवण द्यो
ओ फूट्या भागां रो छींको
मिनक्यां नै हिस्सा लेवण द्यो

(दो)

आवण नै तो सगळी बातां आवै है
चौड़ै पण कद मन री घातां आवै है
के भोळा माणस भेंट चढै स्यारां री
पतळै लड़ री माड़ी रातां आवै है
हां आप घड़ी अर बाड़ बडी होवैली
कद रोजीना बा बेमाता आवै है
झूठ बगत री परतख झूठी बातां है
कद नार सतवंत्या नातां आवै है

ठिकाणो :
गुसाईंसर बड़ा
तहसील-डूंगरगढ़
जिला-बीकानेर (राज.)
मो. 9799305760

 ISSN : 2320-0995

लातां रा भूत जठै बातां नीं मानै
पकायत उणरै पांती लातां आवै है
लूंठा री तो बातां ई छोडो 'पुन्नू'
लूंठा रै तो भूतां भाता आवै है

(तीन)

आपां आणा जाणा छोड्या
कितरा ताणा-बाणा छोड्या
तीज त्योहारां सब भूल्या
रीत रिवाज निभाणा छोड्या
कूड़-कपट रा सौदा तोलां
बै सत रा पाणा छोड्या
बिसारी पुरखां री बातां
चरणां सीस निवाणा छोड्या
मद में मद्दुआ बण घूमो
गिरबै गीतड़ा गाणा छोड्या
होटल ढाबां ल्यो चटखारा
घर का देसी खाणा छोड्या
पिछम री परछाई ओढी
अर संस्कार कमाणा छोड्या

(चार)

थे हो सुख रा घाट पिताजी
थांस्यूं म्हारा ठाट पिताजी
आंगण मेळो, हाट पिताजी
क्यूं म्हैं जोवां बाट पिताजी
थारी छायां स्यूं घर मंगळ
थास्यूं सगळा ठाट पिताजी
भळभळ करतो दिवलो चसै
उणरी उजळी बाट पिताजी
है घर आंगण रोसन जिणसूं
ज्यूं गीता रा पाठ पिताजी

(पांच)

जितरो ऊंडो थळ है बेली
उतरो मीठो जळ है बेली
बिरखा पाणी भीजी भोम
किरसै हाथां हळ है बेली
गांव गवाड़ां डंका बाजै
जिणरै कन्नै थळ है बेली
लूंठा री लूंठम घणओछी
रचै पग-पग छळ है बेली
पीपळ बैठ्या बोलै कूड़
हाथां गंगाजळ है बेली

(छह)

के थारो के म्हारो बीरा
साथ लगाज्यो नारो बीरा
मौन रह्यां कद काज सरैलो
छोड मती अब लारो बीरा
हाकां सूं ई हाकम हालै
बणणो पड़सी खारो बीरा
भेळां री भेळप व्है भारी
मत कर थारो-म्हारो बीरा
डूब रही भासा री डफली
इण डोरी नै स्सारो बीरा
सूना खेत चरै नित गोधा
घरकां नै नीं चारो बीरा
हाथां क्यूं हाथ धर्‌यां बैठ्या
के होसी पछै थारो बीरा

◆◆

छगन लाल व्यास

म्हारी रामेश्वरम्-मदुरै तीरथ-जात्रा

दुनिया में भारत री भूमि री कोई होड नीं! आ पवित्र भोम, अठै रा मिनख कांई जीव जिनावर, झाड़खो अर भाटै पाणी री ई महिमा। मिनख चालती कीड़ी नै ई तकलीफ देवै नीं अर हर ठौड़ भलाई में भाग राखै तो ई जाण्या अणजाण्या पाप हुय जावै। किणी रो बुरो हुय जावै तो कैवीजै कै तीरथ करयां पाप धुप जावै। इणी कारणै बुढापै में हर कोई तीरथ जात्रा करणी चावै ताकि मोक्ष मिलै, संसार-चक्र सूं छुटकारो मिलै।

यूं बुढापै में बेटां सूं आस कै वै तीरथ करावै, पूरी उमर री भूल चूक सूं निजात दिलावै। इणी कारण श्रवण कुमार रा दाखला देवै। सुपात्र कैवीजै।

आजकाल कळजुग! लाखां में गिणती रा पितृभक्त। सरकार चावै कै बूढा-बडेरां नै तीरथ करवायां उणां री आसीस सूं सरकार फळै-फूलै। बस, औ विचार किणी भलै मुख्यमंत्री रै दिमाग में आयो अर उणां 'वरिष्ठ नागरिक तीर्थ योजना' जनता नै दीन्ही। राजस्थान में आ योजना 2013 सूं लागू। इण दस बरसां में सरकार री तरफ सूं अेक लाख सतरह हजार लोगां नै जात्रावां करण रो पुण्य कमा लियो। बरस 2023-24 में चाळीस हजार नै जात्रा करावण री मंशा।

ठिकाणो :
गांव पोस्ट-खंडप
वाया-मोकळसर
(बालोतरा) राजस्थान
मो. 9462083220

योजना पेटै धणी लुगाई अर पिचतर पार कियोड़ा हुवै तो अेक कोई साथी चाल सकै। म्हैं ई योजना रो फॉर्म भरयो। हवाई जात्रा नै पैलपांत राखी। विदेश जात्रा। नेपाल रै काठमांडु रो नंबर लॉटरी खुली पण वा ई वेटिंग में। खैर!

 ISSN : 2320-0995

जोग संजोग री बात। अेक रात रा फोन आयो कै आपरो अर आपरी जोड़ायत रो वोटर कार्ड वाट्सएप माथै घंटै भर में भेजो। रात रा खोजबीण कर'र वोटर कार्ड भेज्या अर आगलै ओके कीन्हो तो भरोसो बंध्यो।

तय तारीख नै दोन्यूं जयपुर पूग्या। वैवस्था जोरदार। जळमहल रै साम्हीं धरमसाळ बुक हुयोड़ी। कमरै में सामान राखतां कागजी कार्यवाही में पूग्यो तो उणां वोटर कार्ड नूंवो निकाळ्योड़ो स्केन नीं हुवै, कैवतां 'ना' दे दियो तो लाग्यो कै सरकार रै घर में अणूती पोल है। जद वोटर कार्ड वाट्सएप करया उण बगत ई धोबी रै घर रो ना दे देंवता तो औ पांच सौ किलोमीटर रो पैंडो क्यूं करतो! पण इणरो जवाब कुण देवै! लागै जिणरै चरवड़ै अर दुखै जिणरै पीड़। लगैटगै पचासेक वरिष्ठ नागरिकां री आ ईज पीड़।

घर आवतां ऊभै मारग, विचार। सूती बैठी डोकरी अर घर में घाल्यो घोड़ो। घर वाळी ताना न्यारा कसै, ''कर दीन्हा च्यारूं धाम अर नेपाल जात्रा ई। वा बस सूं कीन्ही तो अेकण बार सगळा नै जयपुर सूं दिल्ली तांई हवाई जहाज में ई बैठाय दीना। यूं तो तृष्णा वैतरणी। ठाला बैठ्या करै कांई। नीं जाणै कद फॉर्म भरयो अर ऊंघ देय'र औजको मोल लीन्हो!'' म्हैं चुप। आ तो जोग री बात, नींतर करयो तो भला सारू ईज हो।

नूंवी बात नव दिन, ताणी खेंची तेरह दिन। धीरै-धीरै भूल पड़गी। आज अचाणचक मैसेज आयो—''आपरो रेलजात्रा में मुख्य सूची में नाम। अठाइस जुलाई नै दोन्यूं रा आधार कार्ड, मूल फॉर्म, डॉक्टरी सर्टिफिकेट आद साथै भगत री कोठी (जोधपुर)आवणो है।'' बांच-बांच नै फेरूं बांच्यो, क्यूंकै दूध सूं बळ्योड़ो छाछ रै ई फूंका देवै। पूरो विश्वास हुयां घरवाळी अर टाबरां सूं बात कीन्ही—रामेश्वरम्-मदुरै जात्रा रो न्यूतो।

जात्रा में जावण री त्यारी में घरवाळी थैला भरै तो म्हैं कह्यो, ''आ सरकारी जात्रा है। खावण-पीवण रो पुख्ता प्रबंध हुवैला।'' पण वा कैवती, ''परायी आस सदा निराश।''

पैली बस सूं जावणो तय कीन्हो। वा लगैटगै दस बज्यां जोधपुर उतार देवै। सस्ती अर सुंदर। टाबरां नै भणकारो हुयो तो बोल्या, ''अै गाडियां कद काम में आवैला। म्हे सगळा आपने रेल में बैठावण नै चालस्यां।''

भगत री कोठी रै प्लेटफार्म नंबर अेक माथै टेंट-कुर्सियां री वैवस्था। चाय-पाणी, नाश्तै रो प्रबंध देखतां जयपुर रा चित्राम मत्तैई निजर आवण लागा। कागजी कार्यवाही पूरी हुंवतां ई आई कार्ड माथै एस-4 में सीट नंबर-62-63 लिख्योड़ो यानी पूरो नैछो। सरकारी नाश्ता कर'र घरवाळी 'वो ई लाव, वो ई लाव' करण लागी तो टाबर गाडी रो बगत पूछ्यो तो दोय बज्यां रो बतायो। हाल अेक में ई बीसेक मिनट बाकी। कैवतां गाडी बाजार कानी मोड़ी अर ओ सोचतां सरकारी टैम है, सो दोय रा तीन बजैला। दो दस माथै ठेसण पूग्या अर गळै में आईकार्ड देखतां किणी कह्यो, ''गाड़ी तो जावण वाळी। म्हे ई पौंछाय आय रह्या हां।'' मन में भेय। फेरूं मूंडे आयो कवो पड़ै। सोच्यां पग भरया तो गाडी रवाना हुयोड़ी! गार्ड जद ओळखिया कै अै तो जातरू।

चालती गाड़ी नै रुकवायी अर कह्यो कै किणी डिब्बे में चढ जावो। टाबर टाटा करता फोटू खींचता अर पोता-पोती रोवता—'दादा! म्हे ई आवूं'। माळावां सूं लद्योड़ी भारत गौरव पर्यटन रेल नूंवी बीनणी री भांत। जगै माथै पूग्यां जीव में जीव आयो अर जात्रियां सूं परिचै हुवण लाग्यो। इणी बिचाळै खाणो खावण सूं पैली बंद बोतल पाणी। खाणै में दोय सब्जी अर दाळ। अेक मिठाई रो पीस, सलाद, अचार, दही रो मठ्ठो, चिप्स, परांवठा, चावळ आद-आद। पूरो सात्विक भोजन। बिना प्याज, लसण वाळां सारू ई वैवस्था! आ वैवस्था देखनै घरवाळी अणूती राजी, क्यूंकै उणनै बीड़ी-सिगरेट रै धुंवै साथै कांदा-लसण रो टच हुयां ई ऊबका आवै।

खाणै रै बाद हरेक जात्री नै अेक थैली, चद्दर, तौलियो, छतरी, दंत मंजन रो पूरो किट,इण साथै मुख्यमंत्री जी री संदेश अर शुभकामनावां वाळो लिफाफो मिल्या। लाग्यो कै कैड़ी आलीजा वैवस्था। आंतरड़ा मत्तैई आसीस देंवता।

चालती गाडी फालना रुकी। अठै सूं जालोर, पाली अर सिरोही जिलै रा जात्री चढ्या। जाणकारी मुजब भगत री कोठी माथै बाड़मेर, जोधपुर अर जैसलमेर रै जात्रियां नै बुलवाया।

किणी चीज नै झेलावतां फोटू,चाय अर पाणी री बोतल देंवतां ई फोटू। सुबै साढी पांच बज्यां पैली चाय साथै बिस्कूट, आठ बज्यां री चाय रै पैली नाश्तो अर शाम रा च्यार बज्यां री चाय सागै नमकीन आद रो पाउच। चाय फीकी अर मीठी, कॉफी वाळां नै कॉफी। बगतसर सब त्यार। उनतीस नै ऊगै इग्यारस। उणां सारू फळाहार अर अेक बगत वाळां सारू ई पूरो ध्यान।

गाडी रफ्तार पकड़ी तो अलेखूं ठेसण छूटता रह्या। कठैई रुकी तो देखता रह्या। रात-दिन गाडी में रैवतां ई थाकैलो नीं, इणरो कारण कार्मिकां रो आछो वैवार, जात्रियां रो सनेव। लुगायां भजन गावती तो कोई गाडी में बणायै मिंदर रा दरसण कर राजी हुंवती। खावण-पीवण रो कीं तोटो नीं। तिण ऊपरां चोर-उचक्कां रो तो रत्तीभर भै नीं। जाणै घोड़ा बेच'र सूता। हर कोच में अेक-अेक स्कॉट गाइड, अेक-अेक गार्ड, अेक-अेक साफ सफाई वाळो अर छह-छह वेटर। पछै कैड़ी चिंता!

आ भारत गौरव रेल अणूतै अंजस वाळी। इणमें सिनान री सुविधा अर सीट, खिड़की आद ई आछा। आ कठैई गर्मी सूं बचती दौड़ती तो कठैई बरसात में भीगती इकतीस नै सुबै पांचेक बज्यां कुडलनगर (मदुरै) रुकी। गाडी में ई अेनाउंस हुयो कै अठै सूं खुदोखुद रै कोच नंबर वाळी बस में बैठ'र रामेश्वरम् जावणो है। दसेक बज्यां पूग्या। होटल में न्हा-धोय'र बारै बज्यां सूं तीन बज्यां तांई गोल्डन पैलेस में खाणो खावणो है। पण उठै रै राज्य सरकार री बसां सूं रामेश्वरम् जावतां अेक होटल माथै बस रुकी तो ठाह पड़्यो कै पुळ रै कारज सूं गाडियां ठेठ नीं जाय रही है। घरवाळी बोली, ''औ ई कारण

हुवैला नींतर दसेक साल पैली आया जद तो गाडी ठेठ गई।'' औ पतियारो हुंवतां अलेखूं लुगायां पूछती, ''थे गयोड़ा हो तो बतावो कै कैड़ोक मिंदर है, कांई प्रसिद्ध है अर कितरा कुवां रो सिनान, कांई प्रसिद्ध, कितरा कुआं रौ सिनान...''

देखतां-देखतां बसां रामेश्वरम् धाम पूगगी तो जैकारा लागण लागा। एस-4 वाळां नै सनराइज होटल में ठैरणो। होटल मिंदर रै सनमुख। अे.सी. रूम। दो-दो, तीन-तीन जात्रियां सारू कमरा। अठै न्हा-धोय'र गाभा बदळ्या अर होटल गोल्डन पैलेस पूग्या। खाणै री वैवस्था ऊपर अर नीचे रै हॉल में। भीड़ देखतां लागो कै जे होटल तांई भोजन पूग जावतो तो अवैवस्था नीं हुंवती या अेक-अेक, दो-दो होटलां वाळां नै बुलावता तो आछो रैवतो। हुय सकै, राज रो नेम इण भांत रो हुवै। सिंझ्या रा ई आ ईज गत। इण साथै दोपार री चाय, सुबै रो नाश्तो ई भारी पड़तो, क्यूंकै आ थोड़ी अळघी अर तावड़ो तेज! इणी सूं नजदीक री होटल सूं चाय-नाश्तो लेंवता। सोना करतां घड़ामण मूंघी।

अेक अगस्त री रात बारह बज्यां पछै दो तारीख आयगी जद दोयक बज्यां गाडी रवाना हुवण रै पैली लुगायां खुदोखुद रा सामान संभाळती। उणी ठौड़ पड़्या। सुबै साढी पांच बज्यां चाय आयी तो आंख खुली। नितनेम सूं निवृत्त हुंवतां आठ बजतां ई नाश्तो त्यार। अेकाअेक याद आयो, जावतां री बगत सेलम जंक्शन माथै गाडी आधो घंटो रुकी स्यात, अबै भी रुकैला। अठै पढायोड़ो छोरो रैवै। फोन कर्‌यो तो खूब राजी हुयो अर बोल्यो, ''धिन्न घड़ी, धिन्न भाग। म्हैं दर्शन कर भागधारी मानूंला।'' भेंट-पूजा अर नाश्तो लेय'र ठेसण हाजर।

''नाश्तै आद रो कारज कोनी, पूरी अर आछी वैवस्था सरकार कर राखी है, फगत ठेसण आयां थारी याद आयगी।''

सेलम जंक्शन सूं गाडी सरणाट निकळगी। वो देखतो ई रैयग्यो। फोन आयो, ''आप जावतां फोन करता तो म्हैं ऊभो ज्यूं आय जावतो, ठेसण सूं दसेक मिनट रो रास्तो। म्हैं पढ नीं सक्यो जद हजार कोस आवणो पड़्यो। अठै मारवाड़ी दिखै ई कठै! आवै ई कुण! आप उतर जावता, दोय-च्यार दिनां सूं पूगाय देंवतो।'' कैवतां उणरो कंठ भरीजग्यो। म्हनै लागो कै कितरो हेत! कितरी आंख्यां बिछावै, मारवाड़ियां सारू!

म्हैं थावस बंधावतां कह्यो, ''औरूं कदैई आवूंला। थूं तो सेठ बणग्यो!''

''आप सारू कैड़ा सेठ! थाप देय'र मूंडो रातो राखां। आप कनै सूं निकळग्या! औ पछतावो।''

गाडी ज्यूं-ज्यूं जोर लगाय दौड़ती जाणै औरूं नै ई जात्रावां करावण री उतावळ हुवै। खाणै री प्लेटां सागै अचार रा पाउच अर पाणी री बोतलां देख आनंद री अनुभूति मत्तै ई हुंवती।

अहमदाबाद रात दस बज्यां रुकी तो तीन तारीख जाऊं-जाऊं करै अर चार आऊं-आऊं। आखर चार तारीख आयां ई भारत गौरव रेल हॉर्न बजावती रवानै हुयी तो लागतो आठ बज्यां जोधपुर पूग जावांला। रात रैय-रैय जागता फालना वाळा। आखर सुबै री चाय आयगी अर लारै ई पकौड़ा, केळां रै नाश्ते साथै चाय। सातेक बज्यां फालना रुकी अर जात्री उतरण लागा।

खाणो खाय'र होटल पूग्या तो जीव में जीव आयो। अणूती गर्मी देखतां लागतो औ ई आपाणै राजस्थान रो धरम भाई। ठंडा पोहर रा समदर, मिंदर देखण नै निकळ्या तो मारवाड़ी होटलां, मारवाड़ी मिनख ई दिख्या। कोई कथा सुणण नै तो कोई दर्शन नै। म्हांरै में सूं कोई कोई खुद रो ग्रुप बणाय'र कनै वाळा मिंदर अर दूजी जगावां देखण नै जावता देख'र म्हांरै कमरा वाळा ई मूंडो धोवता तो घरवाळी कह्यो, ''अठै खास समदर सिनान, पछै बाईस कुवां रो सिनान कर'र मिंदर-दरसण री ई मोटी महिमा है। इण कारण अेक बार देख लेवां। सुबै मणि दरसण कर'र आस-पाड़ोस री जग्यां देख लेवांला। अेकमत हुयां कनै समुद्र। शांत समुद्र। रामजी रा भाटा निजर चढै अर मन राजी हुवै। सिनान कर'र भीग्योड़ा गाभा में बाईस कुवां रै सिनान सारू पच्चीस रुपिया री रसीद कटवावतां सिनान करतां जीव हाथ-हाथ कूदतो। म्हैं कह्यो, ''आ वैवस्था ठीक कीन्ही, नींतर लारली बार सिनान करावण वाळा मन मांगी राशि वसूलता। सिनान करतां कुवां माथै नांव देखता अर लागतो उणी नदी रो सिनान कर रह्या हो। सिनान रै बाद आरती रो बगत हुयग्यो। अेक पंथ दोय काज री भांत, आरती री लैण में लाग्या।

आरती करायां पछै होटल जाय'र गाभा बदळ'र होटल गोल्डन पैलेस पूग्या तो वा री वा गत! रात रा सोवण सूं पैली समचारां मुजब तीन बज्यां रो अलार्म भर्‌यो अर पाड़ोसी कमरै वाळां नै ई कह्यो कै थोड़ा म्हांनै ई जगाईजो। मणि दर्शन री हूंस में अलार्म रै पैली आंख खुलगी। सिनान कर'र लाइन में लाग्या उण सूं पैली लांबी-चौड़ी कतार! मिनख बदमासी ई करै, मौको देख'र बिचाळै बड़ै। चारावाळा हाथ में अेक झुमको लियां गौ दान करावता दस रिपिया लेवै तो लागै गाय इण री, चारो इण रो अर पईसा जातरुवां रा! म्हने लागो—उदर निमितम् बहु कृत वेशम्।

लगैटगै दोय घंटा पगां ऊभा रह्यां मणि दरसण सारू पचास, सौ अर दो सौ री रसीद जरूरी देख'र माथो बरणाटै चढ्यो। औ कांई! दरसण री रसीद! पण वैवस्था। वैवस्था रै नांव माथै कूलर, पंखा लगावता, पाणी रो प्रबंध करता तो आछो। बीचै अेक आदमी परसेवा में लबालब हुंवतो धड़ाम पड़ग्यो। उणनै कुण संभाळै! लुगाई रोवै, पण मिनख अरवड़ै, कुचळीजण रो भै! अठै लाग्यो, जे पाणी हुंवतो, कूलर हुवतां अर हुंवती मिनख में दया! मणि दरसण कर'र समुद्र सिनान, बाइस कुवां रो सिनान अर मिंदर दरसण कर'र होटल माथै चाय-नाश्तो कर खुद रै कमरै पूग'र सिनान-संपाड़ा कर्‌या। टेक्सी तै कर आठ दस जगावां ई देखी, परखी।

बारह बज्यां रै लगैटगै खाणै वाळी होटल पूग्यां पैली समाचार हुया कै रूम खाली कर'र ई खाणै सारू आवणो है। बीचै ऊभै मारग बाजार। किणी-किणी रा न मोल भाव करावतां खरीददारी करतां खाणो खाय'र बसां सूं मदुरै रवाना। ज्यूं बस भरीजै, रवाना।

च्यारेक बज्यां बसां मीनाक्षी मिंदर रै दक्षिण द्वार माथै रुकी तो घोसणा हुयी कै दरसण कर'र आथूणै द्वारे होटल मीनाक्षीपुरम् में खाणो खाय'र आठेक बज्यां कनलै बस-स्टैंड पूगणो है। उठै सूं सीधा कुडलनगर रेलवे ठेसण।

मिंदर में भीड़ देखतां लाग्यो कै ओ है जनसंख्या रो विस्फोट! जावां उठै ई पग देवण री जगै नीं! दरसण कर बाजार देखतां-देखतां होटल पूग्या तो लाग्यो कै गाडीवाळै खाणै री होड नीं। अठै सूं बस-स्टैंड किलोमीटर भर। पण टैक्सीवाळा सौ-डेढ सौ मांगै अर तीन री ठौड़ च्यार-च्यार, पांच-पांच नै भरै। काश! वैवस्थापक टैक्सी बुक कराय भेजता!

बस-स्टैंड सूं रेलवे ठेसण। आठ बज्यां आयोड़ा लगता गाडी नै उडीकां। ज्यूं-ज्यूं बसां आवै, जातरू बधै। नैनो ठेसण! नीं पाणी, नीं चाय! आ कैड़ी आफत! कैवता—''गाडी अठै ई पड़ी है, आपरो सगळो सामान अठै ई राखणो है, फगत अेक जोड़ी गाभा अर दवाई आद ले लीजो।'' गाडी आवै तो खुदोखुद री जगै बैठ्यां झपकी आवै तो ई ठीक। सुबै तीन बज्यां पगां हुयोड़ा! जे अठै पाणी रो प्रबंध हुय जावतो तो...! रात रा साढी इग्यारै बज्यां घोसणा हुयी—''गाडी प्लेटफार्म माथै आय रही है! आधो घंटो ठैरैला! आराम सूं चढजो अर खुद री सीट माथै बैठजो!''

देखतां-देखतां आ भारत गौरव ट्रेन साढी नव बज्यां भगत री कोठी प्लेटफार्म तीन माथै। पुळ पार कर'र अेक माथै आवण रै पैली टाबरिया माळावां लियां हाजर। म्हैं देख्यो, ओ कुण कह्यो! औ तो अठै रै रगत में। मां-बाप पूजनीय। धरती पूजनीय। तीरथ कर आवै जिको बडभागी। उणां रा पग धोय'र चरणामृत लियां जाणै म्हांनै ई उण तीरथ रो रत्तीभर फळ ई मिल जावै तो जीवण धिन्न हुय जावै। कितरो सनेव है तीरथा सूं। पाप धोवण अर काया रै कल्याण री जगावां—तीरथ।

कार में बैठण रै पैली माळावां पैरावतां रा फोटू। टाबरिया—''कांई लाया?'' कैवतां टोपी लेवै तो कोई छतरी। कोई आई कार्ड पैर'र कूदै। छोरा अर बहुवां विगत पूछै। खुल'र सुणायां ई जीव नीं धापै तो फेरूं पूछै। सार में नैनी मोटी कमी नै नजरअंदाज करां तो जात्रा सांगोपांग। सरकार नै घणा रंग। लखदाद—आ जात्रा करावण पेटै।

◆◆

डॉ. मंगत बादल

लघुबंध : भला मनख्यां की भली बातां

दो भला मिनख जठै भी मिलैला बै दूसरै लोगां रै भलै री बात करैला। बांरी बातां मं थोड़ी राजनीति री, थोड़ी समाज री, इतिहास अर वरतमान री बातां भी आ जावै। बै कठैई तल्खी साथै, कठैई व्यंग्य साथै तो कठैई अफसोस साथै आपरै मन री कैवता चालै। बांरी बातां में अेकै कानी अतीत रो प्रेम झळकतो दिखैलो तो दूजी कानी वरतमान री विद्रूपतावां भी आपरी आंख्या तरेरती निगै आवैली। सोचणै री बात है—दो भलां मिनख इण सूं अलावा कांई बात करैला? ना बै समाज सेवक, ना किणी राजनीतिक पारटी सूं जुड़ियोड़ा तो और कांई बात करै? अै ईज बातां जद अेक संवेदनशील लेखक री संवेदना रै दायरै में आ जावै तो औ कथेतर गद्य अेक नूई विधा रो रूप धारण कर लेवै।

पोथी :
भला मनख्यां की बातां
विधा : लघुबंध
लेखक :
ओम नागर
प्रकाशक :
बोधि प्रकाशन, जयपुर
संस्करण : 2023
पाना : 108
मोल : 150 रुपिया

ठिकाणो :
शास्त्री कॉलोनी
रायसिंह नगर-335051
मो. 941489707

रचनाकर ना तो किणी रो पिछलग्गू हुवै अर ना किणी री हाजरी भरै। उणरी कलम जिको देखै अर मैसूस करै उणनै अभिव्यक्त कर देवै। बो कदै कविता, कदै कहाणी, तो कदैई उपन्यास या निबंध रो रूप धारण कर लेवै। म्हारै कैवण रो मतलब है कै विषयवस्तु औ खुद तै करै कै उणनै किण रूप में ढळणो है। कंटेंट कदै-कदैई मुंहजोर घोड़ै री भांत हुय जावै। आप उण साथै जबरदस्ती करोला तो बो अड़'र खड़्यो हुय जावैलो। कदै-कदै रचनाकार कीं कैय तो जावै पण विधा रै नाम माथै उणनै कठै खतावै?

आलोचना या समीक्षा रो औ काम हुवै कै बा रचनाकर पाठक बिचाळै पुळ बणावै जिकै सूं पाठक रचना रै गैरै अरथाव रै किनारै पूग उणरो आणंद लेय सकै। इण कारण ई कैयो गयो है कै आलोचना या समीक्षा रचनात्मक साहित्य री अनुगामिनी हुवै।

अेक अगत पण अैड़ो भी आ जावै जद समीक्षा रचनात्मक साहित्य नै अेक अनुशासन देयनै उणरो मारग दरसण भी करै। ओम नागर रा अै छोटा-छोटा बंध साहित्य री किणी बीजी विधा रै अनुशासन में कोनी। अै आपनै कदै निबंध, कदै ललित निबंध, तो कदैई व्यंग्य अर समसामयिक विसय माथै रचियोड़ा आलेख लाग सकै। विचार अर संवेदना सूं भरपूर अै 'लघुबंध' आपरै पाठक नै सोचणै सारू मजबूर करै।

म्हारो औ विचार है जिकै नै साहित्य शास्त्र रो भी समरथन है कै साहित्य जद किणी विशेष विचारधारा या वरग में बंध जावै तो उणरो दायरो सीमित हुय जावै। वो अेक विचार या वाद रो प्रवक्ता हुय जावै। बो हरेक पाठक रो कोनी रैवै। साहित्य जद मिनख री संवेदना नै प्रभावित कर उणरी बुद्धि नै झकझोरै तो उणनै लागै कै आ तो म्हारै मन री बात है। म्हैं भी तो आ बात कैय सकै हो, पण चूकग्यो। आ बात लेखक री सफळता कैयी जा सकै।

'भलां मनख्यां की भली बातां' पोथी में अठ्ठाईस 'लघुबंध' है। आप पोथी नै पढण बैठो तो अेक या डेढ घंटो मुस्कल सूं लागैलो, पण इण दौरान आप देस अर दुनिया री समस्यावां अर बां सारू करियोड़ै थोथै राजनीतिक प्रयासां सूं गैराई सूं जाण जावोला। इण पोथी नै पढ'र म्हैं इण निष्कर्ष माथै पूग्यो कै अै साहित्य में प्रचलित विधावां सूं बारै है। इण कारण आंनै म्हैं 'लघुबंध' नाम दियो। हुय सकै विद्वजनां नै अठै अेतराज हुवै। अेतराज तो जद ई हुयो जिण बगत निराला जी छंद तोड़, मुगतछंद में कविता रची। उणनै 'रबड़ छंद' कैयनै निराला जी रो मजाक उडायो गयो। अज्ञेय जी जद नूंवी कविता रै कवियां नै अेक मंच माथै लेय'र आया तो अेतराज हुयो। कहाणी री परंपरा भी घणी पुराणी ही पण जद 'लघुकथा' आई तो परंपरावादियां नै चोखो कोनी लाग्यो। म्हारै कैवण रो मतलब आप समझग्या कै साहित्य में जद भी कोई नूंवो विचार, विधा आवै तो अैड़ो हुवणो सुभाविक है।

आज पुराणी अर नूंवी दोन्यूं पीढियां सोसल मीडिया माथै धड़ल्लै सूं काम करै। नूंवी पीढी जठै इणरै खतरां सूं असावधान है, पुराणी पीढी फूंक-फूंक पग धरै। आजकाल जादातर लोग आप रा तीन सूं च्यार घंटा सोसल मीडिया माथै लगावै। बै तावळै सूं तावळौ सो कीं जाण लेणा चावै। बां कनै पांच सात या दस-बीस पानां री कहाणी, निबंध या उपन्यास आद पढणै री फुरसत कोनी। अैड़ै बगत में बो ईज लेखन आगै चालैलो जिको रूप में छोटो अर प्रभावसाली हुवैलो। बदळती तकनीक साथै जे लेखक नीं बदळ्यो या उणनै नीं अपणाई तो बो अर उण रो साहित्य पिछड़ जावैलो। 'आवश्यकता आविष्कार की जननी है।' आ बात साहित्य माथै भी लागू हुवै।

अै 'लघुबंध' आज रै बगत री मांग है। म्हैं आं सारू डॉ. ओम नागर नै बधाई देऊं। असली पारखी तो पाठक ई हुवै। बांरी प्रतिक्रिया री उडीक लेखक नै सदीव ई रैवै।

◆◆

राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर'

सबदां रै धकै भोत कीं है...

कुव्यवस्था रै सामीं / आडा फिर सकै जका मिनख / वै अैड़ा गमिया कै / सोधियां नीं लाधै / हीमत री दरिदरता इत्तो कंगाल कर चुकी हियो कै / साव ओछी पड़गी / बिचारां री डिगाई...।

जुगां-जुगां सूं समाज री आ गत हुंवती आई है। जद आम मिनख सूय जावै। चोखा-भला मिनख आंख मींचनै बैठ जावै। समाज री दुरगत रै साम्हीं ऊभो हुवण री किणीज में त्यागत नीं हुवै, तद साहित्यकार आपरी कलम सूं समाजू जथारथ नै उघाड़ै अर मानखै नै जगावण रो काम करै। हिंदी अर राजस्थानी में लगोलग साहित्य सिरजण वाळी आशा पाण्डेय ओझा 'आशा' जियां आपरी जिनगाणी जीवै बियां ई कागद माथै मांडै। वांरी कविता 'आखरी समै' री अै ओळ्यां हालबगत रो चित्राम दिखावै। आपणी संस्कृति, आज रो मिनख, वींरी मनगत, बदळतो बगत आद वांरी कविता में मिलै। वांरौ नवो काव्य-संग्रै 'सबदां रै धकै' लारलै दिनां ई छप्यो थको। सौ पानां री आ पोथी सत्तर कवितावां री माळा जैड़ी है। माळा रा मोती-मिणिया अेकरंगी कोनी; भांत-भंतीला है। कथ्य री मोकळायत है।

कुव्यवस्थावां सूं म्हारी बात सरू हुई...। धकै बधां तो केई रचनावां में परिवार-समाज री विडरूपतावां रा जथारथी चित्राम, चींत-चितार सारू पाठक नै उकटावै। 'खरा मिनख' कविता में वै मांडै कै आज री दुनिया में खरा मिनख खारा लागै लाग्या। टुच्चा स्वारथ अर लोभ-लालच री लाय में मिनख बळतो लखावै। 'सिंझ्या हुगी' कविता री अै ओळ्यां इणी साच री साख भरै—

ठिकाणो :
सावित्री सदन, सी-122,
अग्रसेन नगर, चूरू
मो. 9414350848

 ISSN : 2320-0995

सिंझ्या हुगी / सैंसार रै चूल्ला मांय / बळगी पसूपणा री लाय /चढगी हिंसा री कड़ाई / उबळ रियो मिनख रो लौई / चाल रिया है अस्त्र-सस्त्र रा / झारा, कुड़छा, खुरपा, चिमचा... ।

ऊंचा ओहदां माथै मिल्या दिखावटी सनमान अर हेत बेगो ईज चरूड़ हुय जावै। कूड़ो सनमान दरसावणियां मिनखां रै साचलै चरित री ओळखाण अेक-न-अेक दिन हुवै ई है। 'बडो अफसर' कविता री छेकड़ली ओळ्यां आंख्यां खोलण वाळी है—

तीस, पैंतीस, चाळीस साल / न्यारी ई रई गरूरी चाल / हुया रिटायर पड़्या निढाल / कोई कोनी लेवै हाल / गमग्या बंधु, गमग्या भाई / अेक खुद अर अेक लुगाई।

जवान टाबरां रो गेलै सूं भटकाव आज मोटी चिंत्या-फिकर री बात है। चेतावणी देंवती थकी कवयित्री 'सुण छोरी' कविता में सबद-चित्राम उकेरया है—

वैसीपणां रा घूघरा बांध'र / नाच री है सैतानी आतमावां / थारै ओळै-दोळै / कीं बारली कीं घराळी... ।

'नवी पीढी कविता' में चिंत्या रै साथै व्यंग्य रा जबरा पंच है—

'...पण घणी डरूं जद छोरियां / लाज रा गाभा उतार'र / नागी नाचती / बण जावै काठी अंगरेजी मैमां / करण लागै अंगरेजी मांय / अण-ओपता, अणुता गिटरका-मिटरका... ।

देख्यो जावै तो आज अै चिंत्यावां हरेक मावड़ी री हुवणी चाईजै। आ नीं मानणी चाईजै कै रचनाकार आदू रुढिगत विचारां नै पोखै। कवितावां में कुबगत सूं जलमी चिंत्यावां साथै धीवड़त्यां नै समझावणी दीनी है। लेखिका तो आपरी सुरंगी संस्कृति माथै गीरबो करै। मोटी चिंत्या तो भिस्ट हुंवती संस्कृति है, जकी रो कारण बजारवाद है। लेखिका खुद धीवड़ी री चितार में रमती आपरी मावड़ी री सीख मांडै—

मां कैवती / मत हाल फदक-फदक / पण म्हैं तो ही'ज फदकूड़ी / फदकियां ऊं इज / मिलतो जीव नै आराम।

...अर वा धीवड़ी जद बरसां पछै मां रूप में हुवै तो भावां सूं लड़ालूम 'म्हारी धीवड़ी' कविता बणै। 'बाळपणो' कविता में वै हंकारै ई है कै बालपणौ अर कैशोर जिनगाणी रो सुवरण बगत हुवै—

...साच कैता हा बडेरा / बाळपणा ऊं बती / बिंदास, बेतकलीफ / नीं हुया करै कोई उमर।

संग्रै में मिनख सुभाव अर मन री पुड़तां खोलती केई कवितावां है। जियां, 'टिक नीं सकै', 'फरक हुवै', 'म्हे जीवता हां'। मींत, घरू मिनख अर समाज रा सगळा ई मूंडो फेर सकै, पण ओळ्यूं कदैई मिनख रो साथीपो कोनी छोडै। ओळ्यूं नै लेयनै संग्रै में केई कवितावां है। जियां, 'जबरा मिनख' कविता री अै ओळ्यां देखो—

...पग पसार बैठी है / आ बैरण ओळ्यूं / करतां-करतां आं सगळां सूं / माथा कूट / हुगी हूं / काठी बावळी / अर थांनै कीं / गिनर ई कोनी / कैड़ा जबरा मिनख हो थे!

पोथी री घणकरी कवितावां में लेखिका प्रतीकां रो प्रयोग खामचाई सूं करयो है। अमूरत भावां नै पाठक रै हियै उतारण सारू प्रतीक अर बिम्ब विधान भोत महताऊ हुवै। अेक दाखलो 'अहसासां रो कपास' कविता सूं—

'उमर रा तकिया माथै / टैम रै मुजब / काठो कड़ो पड़गो / अहसासां रो नरम कपास / खूंणा-खूंणा / बणगी गांठां-गूंठ / हुगी मैली-गूदळी / आत्मा री खोळी / जीव करै खोल'र तकियो / पाछो पिंजाऊं / अहसासां रो कपास... ।

'थांरी ओळ्यूं', 'ओळ्यूं रो सूरज', 'ओळ्यूं आळा रूंखड़ा' अर 'नेह री खेजड़ी' आद नै प्रेम री कवितावां कैयी जाय सकै। आज री दुनिया में आध्यात्मिक अर सांसारिक-आत्मिक प्रेम असल अर साहित्य, दोनूं में ई गमतो जाय रैयो है। जोड़ापै सूं निरवाळो जको आत्मिक प्रेम हुवै वीं नै सबदां री सींव में प्रगटणो सोरो काम कोनी। जद ई पोथी रो सिरै नांव 'सबदां रै धकै' अरथाऊ हुवै। सबदां रै धकै जको हुवै वींनै सबदां रै मिस समझ्यो कोनी जावै, मैसूस करयो जावै। 'पूरण प्रेम' कविता में जोड़ायत सूं अळगो, प्रेमिका सूं प्रेम री परिभासा देखो—

जोड़ायतां / सिणगारती रैवै डील / प्रेमिकावां / सिणगारै रूं / बखत रै सागै / कमती पड़ जावै / डील रो सिणगार... ।

पोथी में आपणा रूपाळा आदू संस्कार अर संस्कृति रा चित्राम है तो दूजी ठौड़ भौतिकवादी दीठ में पजेड़ै मानखै री पीड़ ई है। 'म्हे जीवता हां' कविता में कूड़ जिनगाणी रा सैन है तो 'ढकोसला' कविता घर-परवार में लुगाइयां री सनातनी मानतावां नै धूळिया-धूळ करण वाळै नारी-विमर्श माथै कटाक्ष है। म्हनैं खुद नै लखावै कै जका ई विमर्श है वै समाज री सांस्कृतिक खासियतां नै तोड़ण में सफळ हुय रैया है। ईं दिखावटी जुग में पैलड़ो बगत कवयित्री रो लारो कोनी छोडै, जद ई 'फेर चितरीजग्यो' कविता में वै मांडै—

ओट्योड़ो बास्तियो / चूल्हा री भोभर बरतता / सोना सीरखा बरतन / जगमगावता दांत / मेट रा सिनान / नीमड़ा नीचै बूढै दादै रा खैंखारा / अर पोता री / काची धांसी / अमल री किरची / अर हुका री हुड़क / ...उण नानकड़ै समै रा मोटा-मोटा चितराम / मांड्या करूं आज रै / मॉडर्न समै माथै / बावळी म्हैं।

आज रो मिनख आपरी जड़ां खुद ई काटण नै त्यार ऊभो है। मिनख ग्लोबलाइजेशन री फेंट में आयग्या तो गांव जैड़ा गांव कोनी रैया। मोटा स्हैरां री संस्कृति हेत-हिंवळास, भाईचारो, रगत-संबंध सो-कीं हजम करण नै त्यार है। प्रकृति बचावण रा कूड़ नारा सरकार अर मीडिया सूं सुणतां-सुणतां कान पाक जासी पण स्वारथी मिनख रै कान जूं कोनी रेंगै। 'मरघट रा सैनाण' कविता में भविस री दुरगत साव निजर आवै—

कट्योड़ा भाखर / पाटियोड़ी झीलां / बाढ्योड़ा रूंख / म्हैं दिन-दिन देख री हूं / म्हारी धकली पीढियां रै मौत रा / रातोंरात / तर-तर ताड़ ज्यूं बधता अपरोगा सैनाण / ...नस-नस मांय / बटका भरती / नागी सभ्यता रो पसार / खोस लेयी अेक दिन / म्हांणो गांव / ...नैड़ा-नैड़ा / म्हारी आंख्यां ऊं अड़्योड़ा निगै आवै पांवडा-पांवडा पर / म्हनै मरघट रा सैनाण।

छेकड़ सत्तर रचनावां बांच्यां पछै म्हनै आ मैसूस हुवै कै आशा पाण्डेय ओझा री कवितावां आज री ताजा कवितावां है। कवितावां हालबगत रो साचलो डोळ साम्हीं राखै अर चिंत्या ई प्रगटै। 'सरोगेसी' नै आज री पीढी हळकै रूप में भलांई लेवै, पण मां अर संतान बिचाळै जकौ तांतो हुवै वो खतम हुयां के बचैगो? सो-कीं उधार रो, आपणो कीं नीं बचैगो। माटी, रूंख, पाणी, घास-फूस, खेत-खळा, भाखरां नै ई अपणायत चाईजै। बिना अपणायत मिनख तो घुट-घुटनै मर जावैगो। हिंदी भासा में भी कवयित्री री मोकळी पोथ्यां छपी थकी। आ पोथी मायड़ भासा-साहित्य में अेक गीरबैजोग जोगदान है। लेखिका री चींत-चितार, भावाभिव्यक्ति, सबदकोस आद सिमरध है। हार्ड-बाउंड कवर अर साफ-सुथराई में छप्यो औ कविता-संग्रै बांचण जोग है। लेखिका नै मोकळी-मोकळी बधाई।

◆◆

पोथी : सबदां रै धकै
विधा : कविता
कवयित्री
आशा पाण्डेय ओझा 'आशा'
प्रकाशक
सर्वभाषा प्रकाशन, नई दिल्ली
संस्करण : 2023
मोल : 160 रिपिया

डॉ. प्रकाश दान चारण

अनुभै रै आंगणै आखरां रो मंडाण मांडता : अैनांण

युवा कवि आशीष पुरोहित रो 'अैनांण' कविता-संग्रै लीक सूं हट'र रच्योड़ी कवितावां रो संग्रै है। इण संग्रै री कवितावां आपरै रचाव मांय अेक नूंवो प्रयोग भी है। अठै कवितावां संवेदना अर विचार री टकराहट सूं अरथ ताणी पूगण री जगै अरथ री मुगती ताणी पूगै। 'अैनांण' अेक तरै सूं नूंवी कविता री ठसक रो भी अैनांण है।

कविता री मूळ प्रकृति जीवण री भांत अद्‌भुत अर अनोखी हुवै। कविता रै सांचै सूं ज्यादा मोटो हुवै कविता रो साच। कविता किणी भांत रची जा सकै अर किणी विसय माथै। अेक ओळी री भी कविता हो सकै। आजकल तो कोमा-फुलस्टॉप सूं भी कविता बणै है। साच तो ओ है कै कविता कारीगरी हुयगी। तामझाम सूं लदपद कविता संवेदना सूं दूर निरी कलाकारी बण पाठक नै उळझायां राखै। जका कविता नै कोरै जथारथ री अभिव्यक्ति मानै, बै कविता रै आधै साच ताणी ई पूगै। कवि जथारथ नै अभिव्यक्त ई नीं करै, उणनै रचै भी। जथारथ नै रचण री प्रक्रिया मांय कवि जीवण री ऊंडी खाई मांय उतरै। उण बगत बो भासा नै हथियार बणाय पाठक ताणी पूगै। इण काम मांय बो जित्तो सफळ, बित्तो ई बीं रो कविपण सार्थक।

ठिकाणो :
सहायक आचार्य, हिंदी
राजकीय महाविद्यालय,
रोहट, जिला-पाली
(राजस्थान)
मो. 9829818922

कविता सारू बात करां तो अनुभूत री अभिव्यक्ति ई कविता बाजै। पण अनुभूत री भी अेक सींव हुवै, उणी भांत कवि री भी सींव। कवि रै सांमै औ मोटो खतरो रैवै कै अनुभूत नै अभिव्यक्त करता थकां बो कितो ईमानदार रह्यो है। सबद रै सांचै

अनुभै नै आकार देंवतो कवि कितो रचनात्मक रह्यो, उणी सूं कविता रो अरथ विगसाव जांचीजै।

कविता मिनखपणै री आस रो नाम है। कविता जथारथ रो दीठाव भी है तो कविता संभावनावां रो विश्वसनीय ठांव भी। कविता अणबोलां रो मून तोड़ै अर घणबोलां नै मून सूं जोड़ै।

कविता री इण प्रकृति माथै बात करता थकां इण संग्रै री कवितावां री परख करां तो आपां नै आशीष मांय कविता री नूंवी आस निगै आवै है। लागलपेट सूं दूर कवि आपरी संवेदना नै कविता रै ढंग ढाळतो साव देसज अंदाज मांय रैवै है। आपरै आसपास सूं सबद लेंवतो कवि कविता नै नूंवो अरथ देवण री खिमता राखै। आशीष रै कनै ऊरमा भी है अर कविताई री कुव्वत भी। अनुभूत नै आखर देंवतो कवि पाठक रै काळजै आपरी छाप छोडै। साधारण सूं साधारण विसय माथै कवि आपरी कलम चलावतो अेक नूंवी दीठ सारू पाठक नै त्यार करै। रोजमर्रा री घटनावां माथै कवि ऊंडी संवेदना रै साथै विचार करतो आपरी दीठ पाठक ताणी पूगावण रो काम कवितावां सूं करै।

औ ईज कारण है कै 'अैनांण' री कवितावां सबद नै अरथ सूं बांधै नीं, सबद नै अरथ री छिब सूं मुगत करै। इण संग्रै री डर, कांई लेयगी, फरक, अेक साचो रंगकरमी, रेत रो हेत, अंधारो, मन, ब्याज जैड़ी कवितावां अरथ री परिधि सूं बारै निकळ'र अरथ री असीम संभावनावां रै साथै पाठक रै काळजै आपरो असर छोडै। डर हजार भांत रा हुवैला पण औ भांत कित्तो खरो अर कित्तो डरावणो है जठै बो अपणास रो कित्तो मोटो अरथ देवै—

पण बो जाणतो कै / ठेकेदार सूं भी बडो डर हुवै / आथण टाबरां रै / भूखा सूवणै रो डर।

आज री विज्ञापनी सभ्यता मांय भूख रो भी विज्ञापन हुवै है। धापेड़ा भूख रो नाटक करै अर भूखा भूख सूं असली जुद्ध करै। इण फरक नै कवि नूंवै ढंग सूं दिखायो है। बानगी सारू ओ उदाहरण—

थांरी जोड़ायत अर थे / भूख सूं दोय रोटी कम खाओ / नीरोगा रैवण सारू / पण मजूरी करणियो / किसनो अर बीं री जोड़ायत / इण वास्तै कै / टाबर तो कदास / धाप'र जीमलै। (फरक)

'अैनांण' री कवितावां कवि री कविता सारू ऊंडी दीठ अर जीवण मांय कविता री भूमिका रो दीठाव है। कवि थकाहारा बौद्धिक होवण री जगै जीवण रै मूळ ताणी भाव अर संवेदना रा तार जोड़ण री सोच राखणियो है। उण री निजर कविता रो कणूको औ है कै—

कविता / फगत कलम सूं / कागज पर / नीं मांडीज सकै / बा तो होय सकै / सियाळै सूं पैली / बळीतै वास्तै / नीड़ आळी डाळी / छोडण सूं भी। (कविता रा कणूका)

'अैनांण' री कवितावां संभावित साच रै साथै उण साच नै भी बारै काढै जकै नै ढकण सारू घणा प्रयास हुंवता रैया है। राड़ सूं रुजगार री सच्चाई कवि री निजर सूं कठै बचै ही। जाति अर धरम रै धंधै री गांठ खोलतो कवि साफ कैवै—

जात-पांत री आग / सूं ई सही / केई घरां रै चूल्है में / आज भी बळीतो है। / हरिये अर केसरिये री / राड़ सूं ईज / किणी रै भाग में / रोटी तो आवै है। (राड़ रुजगार ईज तो है)

इण संग्रै री कळजुग रो प्रेम, प्रेम देवै दीठ, रचै म्हारी प्रीत जैड़ी कवितावां रचनात्मक दीठ सूं कमजोर कवितावां है जठै बै पाठक माथै खास असर नीं छोडै। छोटी कवितावां मांय देस, खास, बैसक नै छोड़ देवां तो ब्याज, बगत, बीज अर सायर जैड़ी कवितावां आपरै रचाव मांय घणी असरदायक बणी है।

अनुभै रै आंगणै आखर रा मांडणा मांडती कवितावां री पोथी 'अैनांण' राजस्थानी साहित मांय आपरी खास जगै बणावैली। साहित्य अकादमी रै युवा पुरस्कार 2022 सूं आदरीजी इण पोथी सारू कवि आशीष नै घणी बधाई अर रंग।

◆◆

पोथी : अैनांण
विधा : कविता
कवि : आशीष पुरोहित
प्रकाशक
गायत्री प्रकाशन, बीकानेर
पैली खेप : 2021
पाना : 80
मोल : 150 रुपिया